Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठाऔर खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

वर्ष- 6
अंक- 38

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

15 सफर 1442 हिज्री कमरी 23 तबूक 1400 हिज्री शम्सी 23 सितम्बर 2021 ई.

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़जल नाज़िल करता रहे। आमीन

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

प्रत्येक मुस्लमान पर सदक़ा करना अनिवार्य है।

(1442) हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कोई दिन भी ऐसा नहीं कि जिसमें दो फ़रिश्ते जब कि बंदे सुबह को उठते हैं नाज़िल न होते हों। उनमें से एक कहता है : हे अल्लाह! ख़र्च करने वाले को बदल अता कर और दूसरा कहता है : बख़ील का धन व्यर्थ जाए।

(1445) हज़रत अबू मूसा अशरी रज़ियल्लाहु अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : हर मुस्लमान पर सदक़ा करना ज़रूरी है। लोगों ने कहा : हे अल्लाह के नबी जो व्यक्ति ताक़त न रखे? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया वह अपने हाथ से मेहनत करे। ख़ुद भी फ़ायदा उठाए और सदक़ा भी दे। उन्होंने कहा : अगर यह भी न हो सके?आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : ज़रुरतमंद मुसीबतज़दा की सहायता करे। उन्होंने कहा अगर यह भी न हो सके तो? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : चाहिए कि अच्छी बात पर अमल करे और बुराई से बचा रहे। यही उसके लिए सदक़ा है।

(बुख़ारी, भाग 3 किताब अल् ज़कात, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

मैं तुम्हें कहता हूँ कि जो तरीक़ा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने धारण नहीं किया वह सिर्फ फ़ुज़ूल है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बढ़कर मुनइम अलैहि की राह का सच्चा अनुभवी और कौन हो सकता है। अल्लाह तआला ने इस सिलसिले को स्थापित कर के यही चाहा है कि वैसी ही जमाअत स्थापित हो जैसी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तैय्यार की थी।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

जमाअत अहमदिया का लक्ष्य

हमारी जमाअत याद रखे कि यह साधारण बात नहीं है और केवल ज़बान से तोते की तरह उन शब्दों का रट देना मूल लक्ष्य नहीं है, बल्कि यह इन्सान को कामिल इन्सान बनाने का एक सफल और लक्ष्य से न चूकने वाला नुस्ख़ा है,जिसे हर समय सक्ष्य के रूप में रखना चाहिए और तावीज़ की तरह सम्मुख रहे। इस आयत में चार प्रकार के कमालों के प्राप्त करने की ओर लक्ष्य है। यदि यह उन चार प्रकार के कमालों को प्राप्त करेगा तो मानो दुआ मांगने और इन्सान के जन्म के हक़ को अदा करेगा और उन सामर्थ्यों और शक्तियों के भी काम में लाने का हक़ अदा हो जाएगा जो उसको दी गई हैं

आयत अन्अमत अलैहिम की तफ़सीर

इस बात को कभी भूलना नहीं चाहिए कि क़ुरआन शरीफ़ के कई हिस्से दूसरे की तफ़सीर और व्याख्या हैं। एक स्थान पर एक को गूढ़ रूप से वर्णन किया जाता है और दूसरे स्थान पर वही बात खोल कर वर्णन कर दी गई है। मानो दूसरा पहले की तफ़सीर है। अत: इस स्थान जो यह फ़रमाया: صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ (अलफ़ातिह:7) तो यह इजमाल के तरीका पर है, परन्तु दूसरे स्थान पर मुनइम अलैहिम की ख़ुद ही तफ़सीर कर दी है। مِنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ (अलनिसा:70) इनाम पाने वाले चार किस्म के लोग होते हैं। नबी, सिद्दीक़,शुहदा,और सालिह। अंबिया अलैहिमुस्सालम में चारों शानें जमा होती हैं। क्योंकि यह उच्च कमाल है। हर एक इन्सान का यह फ़र्ज़ है कि वह इन कमालों के प्राप्त करने के लिए जहां निरन्तर कोशिश की ज़रूरत है इस तरीक़ा पर जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने अनुकरण से दिखाया है। कोशिश करे।

आँहज़रत के मार्ग को हरगिज़ न छोड़ो

मैं यह भी तुम्हें बताना चाहता हूँ कि बहुत से लोग हैं जो अपने तराशे हुए वज़ीफ़े और विर्दों के माध्यम से उन कमालों को प्राप्त करना चाहते हैं परन्तु मैं तुम्हें कहता हूँ कि जो तरीक़ा आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने धारण नहीं किया वह केवल फ़ुज़ूल है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से बढ़कर मुनइम अलैहि की राह का सच्चा अनुभवी और कौन हो सकता है।

शेष पृष्ठ 12 पर

निसंदेह हर मुस्लमान का कर्तव्य है कि क़ुरआन-ए-करीम को अर्थ के साथ पढ़े, इस ओर से लापरवाही बड़ी तबाही का कारण हुआ है मुस्लमानों के दिल में अल्लाह तआला ने किस तरह क़ुरआन-ए-करीम का प्रेम डाल दिया है कि अर्थ आएं या न आएं वे उसे पढ़ते चले जाते हैं अगर ग़ौर किया जाए तो यह भी इस आयत में वर्णित वादे का सत्यापन है

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो सूरत हिज्र आयत 10 اِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّكۡرَ وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوۡنَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं :

एक अंग्रेज़ अनुवादक क़ुरआन लिखता है कि क़ुरआन ऐसी भाषा में है कि उसको बग़ैर तरतील (कुरान को उसके शुद्ध उच्चारण के साथ धीरे-धीरे पढ़ने) के पढ़ने के चारा ही नहीं। अत: क़ुरआन-ए-मजीद की भाषा उन अल्लाह तआला के पैदा-कर्दा सामानों में से है जिनके माध्यम से क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त की जाती है। सबसे अव्वल अल्लाह तआला ने ऐसे आदमीयों को पैदा किया जो उसे शुरू से लेकर आख़िर तक हिफ़्ज़ करते थे। दूसरे उसकी भाषा ऐसी आसान और आकर्षक बनाई कि सहूलत से याद हो जाएगी। तीसरे उसकी तिलावत नमाज़ों में अनिवार्य कर दी। चार लोगों के दिलों में इस के पढ़ने की ग़ैरमामूली मुहब्बत पैदा कर दी।

ईसाई लोग हमेशा एतराज़ किया करते हैंकि मुस्लमान क़ुरआन-ए-करीम को बिना अर्थों के ही पढ़ते रहते हैं। इस के अर्थ समझने की कोशिश नहीं करते। लेकिन अगर ग़ौर किया जाए तो यह भी इस आयत में वर्णित वादे की तसदीक़ है मुस्लमानों के दिल में अल्लाह तआला ने किस तरह क़ुरआन-ए-करीम की मुहब्बत डाल दी है कि अर्थ आएं या न आएं वे उस पर पढ़ते चले जाते हैं। निसंदेह हर मुस्लमान का कर्तव्य है कि क़ुरआन-ए-करीम को अर्थ

शेष पृष्ठ 9 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

(ऑनलाइन मुलाक़ात)

घाना कम से कम अफ्रीकन देशों के मुक़ाबला में सब से आगे होना चाहिए, यह मेरी इच्छा और इच्छा है, घाना के समस्त अहमदियों तक मेरा यह सन्देश पहुंचा दें

नैशनल मज्लिस-ए-आमला जमाअत अहमदिया घाना की अमीर-ऊल-मौमिनीन हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से आन लाइन मुलाक़ात

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से तिथि 28 नवंबर 2020 ई. को पश्चिमी अफ्रीक़ा के देश घाना की नैशनल मज्लिस-ए-आमला को एम.टी.ए. के वहाब आदम स्टूडीयोज़ स्थान बुस्ताने अहमद अपने प्यारे इमाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ एक virtual मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस से पूर्व हुज़ूर अनवर 2004 ई. में जब अपने दौर-ए-ख़िलाफ़त में पहली मर्तबा घाना तशरीफ़ लाए थे उस वक़्त नैशनल मज्लिस-ए-आमला के साथ एक मुलाक़ात इक्करा शहर में अहमदिया मिशन के नैशनल हैड क्वार्टर्ज़ में हुई थी। इस हिसाब से 28 नवंबर 2020 ई. का दिन एक ख़ुश-बख़्त दिन था कि क़रीबन 16 वर्षों बाद पुन: घाना की नैशनल मज्लिस-ए-आमला को यह सआदत नसीब हुई। मुलाक़ात का आग़ाज़ 12 बजकर 18 मिनट पर हुआ। तक़रीबन 80 मिनट तक यह मुलाक़ात जारी रही। मुलाक़ात के आरम्भ में हुज़ूर अनवर ने दुआ कराई। इंतिहाई मुहब्बत और शफ़क़त के साथ दौरान-ए-मुलाक़ात हुज़ूर का पवित्र मुख मुस्कुराहट से खिला रहा और हर अंदाज़ से हुज़ूर की मुहब्बत और प्रेम का प्रकटन होता था। कीमती हिदायात और शफ़क़तों का हसीन इमतिज़ाज था। इफ़्तिताही दुआ के बाद समस्त आमिला मैंबरान ने एक के बाद एक खड़े हो कर अपना परिचय करवाया और अपने विभाग के सम्बन्ध में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से ज़रीं हिदायात लीं।

घाना की यह भी ख़ुशक़िसमती है कि हुज़ूर अनवर बहुत सारे चेहरों से परिचित हैं। परीचय के समय हुज़ूर अनवर कुछ ख़ुश-नसीबों को देखकर प्रेम के अंदाज़ में उनसे वाक़फ़ीयत का इज़हार फ़रमा कर उनका दिल बढ़ाते रहे। समस्त लोगों के लिए यह बात बहुत दिल गरमाने वाली थी कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ को बहुत सी जगहों और बहुत से लोगों से ज़ाती तौर पर वा-क़फ़ीयत थी।

आदरणीय मौलवी मुहम्मद बिन सालिह साहिब,अमीर मिशनरी इंचार्ज साहिब और नायब अमीर से परिचय के बाद हुज़ूर अनवर ने जमाअत अहमदिया घाना के जनरल सैक्रेटरी साहिब से काम से सम्बन्ध में पूछा और हिदायात दीं कि किस तरह वह अपने काम में बेहतरी पैदा कर सकते हैं। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि बेहतर है कि आप रोज़ाना कम से कम दो घंटे मिशन हाऊस में आकर काम किया करें।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने जामिआ अहमदिया घाना के प्रिंसिपल साहिब से विद्यार्थियों की संख्या के सम्बन्ध में इस्तिफ़सार फ़रमाया तो प्रिंसिपल साहिब ने बताया कि जामिआ अहमदिया इंटरनैशनल घाना में इस वक़्त 24 देशों से ताल्लुक़ रखने वाले 231विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने इस पर फ़रमाया माशाअल्लाह यह तो सही माअनों में जामिआ इंटरनैशनल है।

इस वर्ष अल्लाह तआला के फ़ज़ल से तहरीक जदीद की माली क़ुर्बानी में घाना को पहले दस देशों में शामिल होने की तौफ़ीक़ मिली। इसलिए जब नैशनल सैक्रेटरी तहरीक जदीद ने अपना परिचय करवाया तो हुज़ूर अनवर ने जमाअत अहमदिया घाना को तहरीक जदीद की माली तहरीक में संसार के पहले दस देशों में आने पर मुबारकबाद देते हुए हिदायात से नवाज़ा।

वक़्फ़-ए-जदीद का माली वर्ष भी अपने अंत को पहुंच रहा है। इस लिए हुज़ूर अनवर ने नैशनल सैक्रेटरी वक़्फ़ जदीद को भी तहरीक जदीद की तरह क़दम आगे बढ़ाने की तरग़ीब दिलाते हुए फ़रमाया: घाना कम से कम अफ्रीकन देशों के मुक़ाबला में सब से आगे होना चाहिए। यह मेरी इच्छा है। घाना के समस्त अहमदियों तक मेरा यह सन्देश पहुंचा दें।

प्यारे आक़ा ने नायब सैक्रेटरी साहिब तब्लीग़ को तवज्जा दिलाई कि कोवड 19 की वजह से बे-शक लोगों को इकट्ठा करके तब्लीग़ तो नहीं हो सकती है लेकिन इन्फ़िरादी तब्लीग़ तो बहरहाल जारी रह सकती है और जारी रहनी चाहिए। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया

यह कोविड 19 की वजह से ही है कि आप समस्त लोग मुझसे बराह-ए-रास्त बातचीत कर रहे हैं और मैं घाना की नैशनल आमिला से सम्बोधित हूँ। इसी तरह आप लोग भी नए-नए रास्ते तलाश करें। बाक़ायदा मंसूबा बंदी कि कोविड19 के बावजूद हम किस तरह लोगों तक पहुंच सकते हैं और हम किस तरह तब्लीग़ कर सकते हैं। माशा अल्लाह आपका बहुत पुख़्ता ज़हन है, यदि आप कोशिश करें तो यह काम कर सकते हैं।

इसके साथ ही नैशनल सैक्रेटरी तब्लीग़ से भी हुज़ूर अनवर सम्बोधित हुए फ़रमाया : आप अपनी सेहत की वजह से बाहर नहीं जा सकते लेकिन अपने ऐडीशनल सैक्रेटरी साहिब को एक मन्सूबा बना कर तो दे सकते हैं ताकि वह उन पर अमल दरआमद कर सकें। जैसा कि मैंने कहा है कि बहुत सारे माध्यम और रास्ते हैं कि जिनको इस्तिमाल करके आप मौजूदा हालात में काम कर सकते हैं।

सैक्रेटरी तालीम घाना से शफ़क़त का इज़हार करते हुए फ़रमाया कि जब मैं घाना से आया था तो आप काफ़ी जवान थे और अब उमर रसीदा हो गए हैं। हुज़ूर अनवर ने उन्हें हिदायत की कि आपके पास यूनीवर्सिटी जाने वाले समस्त विद्यार्थियों के संख्यां होने चाहिऐं, इसी तरह जो विद्यार्थी सैकण्डरी स्कूल जाते हैं, वे समस्त विद्यार्थी जो प्राइमरी के बाद स्कूल छोड़ चुके हैं, इस की वजह भी मालूम करें कि क्यों उन्होंने तालीम जारी नहीं रखी। इसी तरह पूरी मालूमात इकट्ठी करें कि ऐसे विद्यार्थी जो अपनी तालीम जारी रखना चाहते थे लेकिन हालात की वजह से, ख़ानदानी या माली मसायल की वजह से, वे ऐसा नहीं कर सके। तो हम ऐसे विद्यार्थी की किस तरह सहायता कर सकते हैं, जमाअत उनकी इस सिलसिला में क्या सहायता कर सकती है। आपके पास ये सारी मालूमात होनी चाहिऐं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने जमाअती अख़बार guidance की प्रकाशन के सम्बन्ध में नैशनल सैक्रेटरी इशाअत से इस्तिफ़सार फ़रमाया और हिदायत फ़रमाई कि यह बाक़ायदगी से छपना चाहिए क्योंकि अल्लाह के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया घाना के पास ज़रख़ेज़ ज़हन हैं और मवाद भी मुहय्या है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने मुहासिब साहिब को सम्बोधित करते हुए फ़रमाया कि हर रसीद आपकी नज़र से ज़रूर गुज़रनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने इंटरनल एडीटर साहिब को ऑडिट के सम्बन्ध में उमूमी हिदायात देते हुए फ़रमाया कि तीन महीनो की या कम से कम वर्ष में दो मर्तबा ऑडिट ज़रूर होना चाहिए।

सैक्रेटरी साहिब उमूर ख़ारिजा से जमाअत के सियासतदानों और सयासी पार्टीयों से ताल्लुक़ात, इसी तरह मैंबरान-ए-पार्लीमैंट और सदरान से जमाअत के ताल्लुक़ात से सम्बन्ध में इस्तिफ़सार फ़रमाया और हिदायत दी कि आपका समस्त सियासतदानों से ज़ाती ताल्लुक़ होना चाहिए, खासतौर पर मैंबरान-ए-पार्लीमैंट से आपको चाहिए कि उन्हें एहसास दिलाएँ कि वे मुल्क की बेहतरी के लिए काम करें ताकि मुल्क में ख़ुशहाली आए।

सदर साहिब मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया से हुज़ूर अनवर ने ख़ुद्दाम की संख्या के सम्बन्ध में पूछा जिस पर उन्होंने रजिस्ट्रेशन के अनुसार ख़ुद्दाम और अतफ़ाल की संख्या अर्ज़ की। हुज़ूर अनवर फ़रमाया : आपको अपनी तजनीद की तजदीद करने की ज़रूरत है। जमाअत की हर एक मज्लिस तक पहुँचीं और ग्रासरूट

शेष पृष्ठ 10 पर

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

ख़ुत्बः जुमअः

हे अमीरुल मौमेनीन रज़ियल्लाहु अन्हो ...आप रज़ियल्लाहु अन्हो जो चाहें करिए और जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो की अपनी राय है उस पर अमल करिए, हम आप रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ हैं, आप रज़ियल्लाहु अन्हो हमें हुक्म दें, हम आप रज़ियल्लाहु अन्हो की आज्ञाकारिता करेंगे हमें बुलाऐं, हम आप रज़ियल्लाहु अन्हो की आवाज़ पर लब्बैक कहेंगे, हमें भेजें, हम रवाना हो जाऐंगे, आप रज़ियल्लाहु अन्हो हमें साथ ले जाना चाहें, हम आप रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ होंगे

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारुके आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो की विशेषताओं तथा गुणों का वर्णन

निहावनंद की विजय अपने परिणाम के लिहाज़ से बहुत अहम थी, इसके बाद ईरानियों को एक जगह एकत्र हो कर मुक़ाबला करने का अवसर नहीं मिला और मुस्लमान इस विजय को विजय फ़तह अल् फतूह के नाम से याद करने लगे

जंग जुन्दी साबूर, विजय फ़तह अल् फतूह जंग-ए-निहावनंद और जंग अस्फ़ान के हालात और वाक़ियात का तफ़सीली वर्णन

तीन मरहूमीन आदरणीय मुहम्मद दिया नितिन्नु साहिब मुबल्लिग़-ए-सिलसिला इंडोनेशिया, आदरणीय साहिबज़ादा फ़रहान लतीफ़ साहिब आफ़ शिकागो अमरीका और आदरणीय मलिक मुबश्शिर अहमद साहिब लाहौर पूर्व अमीर जमाअत दाऊद ख़ैल मियांवाली का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 20 अगस्त 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने का वर्णन हो रहा है। इस वक़्त जो विभिन्न जंगें लड़ी गईं उनका वर्णन चल रहा था। उनमें से एक जंग जंग-ए-जुन्दी साबूर है। जब हज़रत अबू सब्रह बिन ज़ोहम सासानी बस्तियों की विजय से फ़ारिग़ हुए तो आप लश्कर के साथ आगे बढ़े और जुन्दी साबूर में पड़ाव किया। जुन्दी साबूर ख़ोज़िस्तान का एक शहर था। बहरहाल इन दुश्मनों के साथ सुबह शाम जंगी युद्ध होते रहे लेकिन ये अपनी जगह डटे रहे यहां तक कि मुस्लमानों की तरफ़ से किसी ने अमान देने की पहल कर दी। दुश्मन चारदीवारी में था। जब अवसर मिलता था निकल के हमला करता था। तो जब एक आम मुस्लमान ने पहल की तो उन्होंने तुरंत चारदीवारी के दरवाज़े खोल दिए। जानवर बाहर निकल पड़े, बाज़ार खुल गए और लोग इधर उधर नज़र आने लगे। मुस्लमानों ने उनसे पूछा कि तुम्हें क्या हो गया है? उन्होंने कहा कि आप लोगों ने हमें अमान दे दी है और हमने इसे स्वीकार कर लिया है। हम कर देंगे और आप हमारी हिफ़ाज़त करेंगे। मुस्लमानों ने कहा हमने तो ऐसा नहीं किया। उन्होंने कहा कि हम झूठ नहीं कह रहे। फिर मुस्लमानों ने आपस में एक दूसरे से इस्तिफ़सार किया तो मालूम हुआ कि मिकन्फ़ नामी एक ग़ुलाम ने यह किया है। जब उसके सम्बन्ध में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो से पुछा गया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने वफ़ादारी को बड़ी एहमीयत दी है। तुम वफ़ादार नहीं हो सकते जब तक इस अह्द को पूरा न करो जो अह्द कर लिया। चाहे ग़ुलाम ने किया उस को पूरा करो। जब तक तुम शक में हो उन्हें मोहलत दो और उनके साथ वफ़ादारी करो। इसलिए मुस्लमानों ने अह्द और शर्त की तसदीक़ की और वापस लौट आए।

(उद्धरित सीरत अमीर-ऊल-मौमिनीन उमर बिन ख़त्ताब पृष्ठ 425 दारुल मारूफ़ बेरूत 2007 ई.)(उद्धरित सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब, शख़्सियत कारनामे, पृष्ठ 689 प्रकाशन अल्फुर्कान ख़ानगढ़ पाकिस्तान)(मौअज्मुल बुल्दान इन, भाग 2 पृष्ठ 198)

यह युद्ध ख़ोज़िस्तान की फ़ुतूहात का अंत था। (मक़ाला "तारीख़-ए-इस्लाम अहद के साथ हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद साहिब नासिर, पृष्ठ 135)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी इस तरह के वाक़िया का वर्णन करते हुए वर्णन फ़रमाया है कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में एक हब्शी ग़ुलाम ने एक क़ौम से यह अनुबंध किया था कि अमुक अमुक छूट तुम्हें दी जाएँगी। जब इस्लामी फ़ौज गई तो उस क़ौम ने कहा हम से तो यह अनुबंध है। फ़ौज के अफ़्सर आला ने इस अनुबंध को तस्लीम करने में आना कानी की तो बात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पास गई। उन्होंने फ़रमाया मुस्लमान की बात झूठी नहीं होनी चाहिए चाहे ग़ुलाम ही की हो।"

(कुछ ज़रूरी उमूर, अनवारुल उलूम, भाग 12 पृष्ठ 405)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माना में एक दुश्मन फ़ौज घिर गई और उसने समझ लिया कि अब हमारा बचना सम्भव नहीं है। पहले जो वाक़िया वर्णन हुआ यह उसी की तफ़सील है। उन्होंने अपने शब्दों में वर्णन फ़रमाया है। इस्लामी कमांडर दबाओ से हमारा क़िला विजय कर रहा है। यदि उसने विजय कर लिया तो हमसे विजय मुल्क वाला व्यवहार किया जाएगा। हर मुस्लमान विजय होने और सुलह करने में अंतर समझता था। विजय के लिए तो आम इस्लामी क़ानून जारी होता था और सुलह में जो भी वे लोग (दूसरा फ़रीक़) शर्त कर लें या जितने अधिक अधिकार ले लें, ले सकते थे। उन्होंने सोचा कि कोई ऐसा तरीक़ अधिकार करना चाहिए जिससे नरम शर्तों पर सुलह हो जाए। इसलिए एक दिन एक हब्शी मुस्लमान पानी भर रहा था उस के पास जा कर उन्होंने कहा। क्यों भई यदि सुलह हो जाएगी तो वह लड़ाई से अच्छी है या नहीं? उसने कहा कि हाँ अच्छी है। वह हब्शी ग़ैर तालीम याफताह था। उन्होंने कहा कि फिर क्यों न इस शर्त पर सुलह हो जाएगी कि हम अपने देश में आज़ादी से रहें और हमें कुछ न कहा जाए। हमारे माल हमारे पास रहें और तुम्हारे माल तुम्हारे पास रहीं। वे कहने लगा बिल्कुल ठीक है। उन्होंने क़िले के दरवाज़े खोल दिए। अब इस्लामी लश्कर आया तो दुश्मन ने कहा हमारा तो तुम से अनुबंध हो गया है। मुस्लमानों ने कहा कि अनुबंध कहाँ हुआ है और किस अफ़्सर ने किया है? उन्होंने कहा हम नहीं जानते। हमें क्या पता कि तुम्हारे कौन अफ़्सर हैं और कौन नहीं। एक आदमी यहां पानी भर रहा था उस से हम ने यह बात की और उसने हमें यह कह दिया। मुस्लमानों ने कहा देखो एक ग़ुलाम निकला था इस से पूछो क्या हुआ? इस हब्शी ग़ुलाम से कहा तो उसने बताया कि हाँ मुझसे यह बात हुई थी। तो मुस्लमानों ने कहा कि वह तो ग़ुलाम था। उसे किस ने फ़ैसला करने का अधिकार दिया था। इस पर दुश्मनों ने कहा कि हमें क्या पता कि यह तुम्हारा अफ़्सर है या नहीं। हम अजनबी लोग हैं हमने समझा कि यही तुम्हारा जरनैल है, होशयारी दिखाई। इस अफ़्सर ने कहा कि मैं तो नहीं मान सकता लेकिन मैं यह वाक़िया हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को लिखता हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को जब यह पत्र मिला तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि भविष्य के लिए यह ऐलान कर दो कि कमांडर इन चीफ़ के बग़ैर कोई अनुबंध नहीं कर सकता लेकिन यह नहीं हो सकता कि एक मुस्लमान ज़ुबान दे बैठे तो मैं उस को झूठा कर दूँ। अब वह हब्शी जो अनुबंध कर चुका है वह तुम्हें मानना पड़ेगा। हाँ भविष्य के लिए ऐलान कर दो कि अतिरिक्तए कमांडर इन चीफ़ के और कोई किसी क़ौम से अनुबंध नहीं कर सकता।

(उद्धरित सैर-ए-रुहानी (7) अनवारुल-उलूम, भाग 24 पृष्ठ 293 -294)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जो ईरान को विजय किया है तो उस की क्या वजूहात थीं, आप रज़ियल्लाहु अन्हो क्यों मजबूर हुए। इनका वर्णन इस तरह हुआ है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की हार्दिक इच्छा थी कि यदि इराक़ और अहवाज़ के मारकों पर ही इस रक्त बहाने वाली जंग का अंत हो जाए तो बेहतर है। जंगें करने का कोई लाभ नहीं। दुश्मन हमला कर रहा है। दुश्मन को एक दफ़ा ख़त्म

कर दिया, उनकी ताक़त को रोक दिया अब यहीं ख़त्म हो जाना चाहिए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने बार-बार इस इच्छा का इज़हार फ़रमाया था कि काश हमारे और ईरानियों के मध्य कोई ऐसी रोक हो कि न वे हमारी तरफ़ आ सकें न हम उनके पास जा सकें परन्तु ईरानी हुकूमत की निरंतर जंगी कार्यवाईयों ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो की यह इच्छा पूरी नहीं होने दी। सतरह हिज्री में महाज़-ए-जंग से मुस्लमान लश्कर के सरदारों का एक वफ़द हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस वफ़द के सामने यह प्रश्न रखा कि मफ़्तूहा इलाक़ों में क्यों बार-बार अह्द तोड़ना और बग़ावत हो जाती है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस संदेह का इज़हार किया कि मुस्लमान मफ़्तूहा इलाक़ों के रहने वालों के लिए तकलीफ़ का कारण बुनते होंगे तभी वादे तोड़े जा रहे हैं। वफ़द ने इस बात का खंडन किया। उन्होंने कहा नहीं इस तरह नहीं है और बताया कि हमारे इल्म में तो मुस्लमान पूरी वफ़ादारी और हुस्न-ए-इंतिज़ाम से काम लेते हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने पूछा तो फिर उस गड़बड़ की क्या वजह है? बाक़ी वफ़द के सदस्य तो इस का कोई तसल्ली बख़श उत्तर नहीं दे सके परन्तु अहनफ बिन केस बोले कि अमीरुल मौमिनीन रज़ियल्लाहु अन्हो! मैं आप रज़ियल्लाहु अन्हो को असल सूरत-ए-हाल से अवगत करता हूँ। बात यह है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने हमें मज़ीद फ़ौजी इक़दाम की मनाही कर दी है कि मज़ीद जंग नहीं करनी और इस क्षेत्र पर रुके रहने की हिदायत की है जो अब तक विजय हो चुकी है परन्तु ईरान का बादशाह अभी जीवित मौजूद है और जब तक वह मौजूद है ईरानी हम से मुक़ाबला जारी रखेंगे और यह कभी मुम्किन नहीं कि एक मुल्क में दो हुकूमतें हो सकें। हर सूरत में एक दूसरी को निकाल कर रहेगी। या ईरानी रहेंगे या हम रहेंगे। उसने कहा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो को इलम है कि हमने किसी क्षेत्र को भी ख़ुद नहीं लिया बल्कि दुश्मन के हमला-आवर होने के कारण विजय किया है। हमने तो ख़ुद कभी जंग की नहीं और यही आप रज़ियल्लाहु अन्हो का हुक्म था। दुश्मन हमला करता था तो मजबूरन जंग करनी पड़ती थी और फिर क्षेत्र विजय भी हो जाते थे। बहरहाल इस में मुस्लमानों में से भी उन लोगों के लिए यह वाज़िह हो गया जो जंगों को बिना कारण के करने के जवाज़ पेश करते हैं और इस्लाम पर एतराज़ करने वालों का जवाब भी इस में आ गया है कि मुस्लमान कभी ज़मीनें हासिल करने के लिए, मुल्क विजय करने के लिए जंगें नहीं करते थे। इन पर हमले हुए तो अमन क़ायम करने के लिए जंगें करते थे और फिर फ़ुतूहात भी होती थीं। बहरहाल उन्होंने कहा कि ये फ़ौजें उनके बादशाह की तरफ़ से आती हैं और उनका यह रवैय्या भविष्य में भी उस वक़्त तक जारी रहेगा जब तक आप रज़ियल्लाहु अन्हो हमें इस अमर की आज्ञा न दें कि हम आगे फ़ौजकशी के इक़दाम करें और बादशाह को फ़ारस से निकाल दें। इस सूरत में अहल-ए-फ़ारस की दुबारा विजय की उम्मीद मुनक़ते हो सकती है।

(मक़ाला "तारीख़-ए-इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद साहिब नासिर, पृष्ठ 136 से 138) (तारीख़ अल तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 502 - 503 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

और बात भी यही थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्होने इस राय को साइब क़रार देते हुए यह समझ लिया कि अब ईरान में मज़ीद पेशक़दमी किए बग़ैर चारा नहीं है। मजबूरी है इसके बग़ैर अमन क़ायम नहीं हो सकता और मुस्लमानों का ख़ून होता रहेगा, जंगें होती रहेंगी परन्तु उस का अमली फ़ैसला फिर भी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने डेढ़ दो साल के बाद 21 हिज्री में निहावनंद के युद्ध के बाद किया जबकि ईरानी ज़बरदस्त ताक़त के साथ मुस्लमानों के मुक़ाबले के लिए निकले थे और निहावनंद के स्थान पर एक ज़बरदस्त जंग हुई थी।

(मक़ाला "तारीख़-ए-इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद साहिब नासिर, पृष्ठ 138-139)

जंग निहावनंद को विजय फ़तह अल् फतूह भी कहते हैं। ईरान और इराक़ में मुस्लमानों की जंगी मुहिम में तीन युद्धों को फ़ैसलाकुन हैसियत हासिल है। अर्थात क़ादसिया का युद्ध, जलूला का युद्ध और निहावनंद का युद्ध। और निहावनंद की विजय अपने परिणामों के लिहाज़ से इस क़दर अहम थी कि मुस्लमानों में विजय फ़तह अल् फतूह के नाम से प्रसिद्ध हो गई थी अर्थात समस्त फ़ुतूहात से बढ़कर विजय।

निहावनंद की यह जंग पहली दो ज़बरदस्त शिकस्तों के बाद ईरानियों की तरफ़ से ऐसे हमले की आख़िरी कोशिश थी। इस युद्ध की तफ़ासील यह हैं कि शाह-ए-ईरान ने जो अब मरू में मुक़ीम था या रिवायत के अनुसार अबूहनीफ़ा दीनावरी में रिहायश पज़ीर था बड़ी सरगर्मी से मुस्लमानों के मुक़ाबले के लिए लश्कर जमा करना शुरू किया और अपने पत्रों से खुरासान से लेकर सिंध तक मुल्क में एक हरकत पैदा कर दी और हर तरफ़ से ईरानी फ़ौज उमड कर निहावनंद में जमा होने लगी।

(फ़ुतूहुल बुल्दान, पृष्ठ184 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2000 ई.)(तारीख़ अल् तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 521 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)(अख़बार तवाल, वुक़अतुं नहाविंद, पृष्ठ 192 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.) (मक़ाला 'तारीख़-ए-इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद साहिब नासिर, पृष्ठ 139)

निहावनंद ईरान का एक शहर है जो किरमान शाह के पूर्व में स्थित है और सूबा हमदान के दारुल हकूमत हमदान से तक़रीबन सत्तर किलो मीटर दक्षिण में स्थित है।

(एटलस फ़ुतूहात इस्लामीया, भाग 2 पृष्ठ 118 प्रकाशन दारुस्सलाम रियाज़ 1428)

निहावनंद मुकम्मल तौर पर पहाड़ों के मध्य एक शहर था।

(सीरत अमीरुल मौमिनीन उमर बिन ख़त्ताब अज़ सलाबी पृष्ठ 426 दारुल मारूफ़ बेरूत 2007 ई.)

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने इस लश्कर की सूचना हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में मदीना इरसाल कर दी।

(तारीख़ अल्तिबरी भाग 2 पृष्ठ 522 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

कुछ दिन बाद जब ख़ुद हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उनके ओहदे से भारयुक्त कर दिया और हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो को मदीना जाने का अवसर मिला तो हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो ने फिर यह ज़बानी सूचना हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में पेश कर दी।

(तारीख़ अल् तिबरी भाग 2 पृष्ठ 523 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

हज़रत साद रज़ियल्लाहु अन्हो को निरस्त कर के यह अहम ओहदा दरबार-ए-ख़िलाफ़त की तरफ़ से हज़रत अम्मार बिन यासिर रज़ियल्लाहु अन्हो को दिया गया। हज़रत अम्मार रज़ियल्लाहु अन्हो को इस ईरानी जंगी कार्रवाई के सिलसिला में जो सूचना मिलती रही वह आप रज़ियल्लाहु अन्हो मदीना भिजवाते रहे।

(अख़बारुल तिवाल, वुकातुल कादिसया, पृष्ठ 192 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.) (फ़ुतूहुल बुल्दान, पृष्ठ 170 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2000 ई.) (मक़ाला 'तारीख़-ए-इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद साहिब नासिर, पृष्ठ 140)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने मज्लिस-ए-मुशावरत आयोजित की और मिंबर पर खड़े हो कर एक तक़रीर की जिस में फ़रमाया हे अरब की क़ौम अल्लाह तआला ने इस्लाम के माध्यम से तुम्हारी सहायता की और इफ़्तिराक़ के बाद तुम्हें मुत्तहिद कर दिया और भुखमरी के बाद तुम्हें धनी कर दिया। और जिस मैदान में भी तुम्हें दुश्मन से मुक़ाबला करना पड़ा उसने तुम्हें विजय दी। अत: तुम न कभी थके न पराजय हुई। और अब शैतान ने कुछ लश्कर जमा किए हैं ताकि ख़ुदा के नूर को बुझाए और यह अम्मार बिन यासिर का पत्र है कि कूमिस, तबारिस्तान, दुनबावन्द, जुर्जान, अस्फ़ाहान, कम, हमाज़ान, माहयन और मसाबसज़ान के रहने वाले अपने बादशाह के गर्द जमा हो रहे हैं ताकि तुम्हारे भाईयों के मुक़ाबले के लिए जो कूफ़ा और बस्रा में हैं निकलें और उनको अपने वतन से निकाल कर ख़ुद तुम्हारे मुल्क पर हमला-आवर हों। हे लोगो इस बारे में मुझे अपना मश्वरा दो।

(अख़बारुल तिवाल, पृष्ठ 192 वुक़अतुन निहावंद, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

यह व्यवहार अहम है। मैं नहीं पाता कि आप लोग ज़्यादा बातें करें और आपस में इख़तिलाफ़ राय रखें। मैं पाता हूँ कि आप मुख़्तसिरन मुझे मश्वरा दें कि क्या यह उचित होगा कि मैं ख़ुद इस वक़्त ईरान को रवाना हूँ और बस्रा और कूफ़ा के मध्य किसी उचित स्थान पर क़ियाम कर के अपने लश्कर का सहायक हूँ और यदि ख़ुदा के फ़ज़ल से इस युद्ध में विजय हो जाए तो अपने लश्कर को दुश्मन के क्षेत्र में मज़ीद पेशक़दमी के लिए रवाना करूँ।

(तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 523 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तक़रीर के बाद हज़रत तल्हा बिन अबैदुल्लाह खड़े हुए और तशह्हुद के बाद बोले कि हे अमीरुल मौमेनीन देश के कर्यों ने आप रज़ियल्लाहु अन्हो को विवेकवान बना दिया है और अनुभवों ने आप रज़ियल्लाहु

अन्हो को होशयार बना दिया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हो जो चाहें करिए और जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो की अपनी राय है उस पर अमल करिए। हम आप रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो हमें हुक्म दें, हम आप रज़ियल्लाहु अन्हो की आज्ञाकारिता करेंगे। हमें बुलाऐं, हम आप रज़ियल्लाहु अन्हो की आवाज़ पर लब्बैक कहेंगे। हमें भेजें, हम रवाना हो जाऐंगे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो हमें साथ ले जाना चाहें, हम आप रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ होंगे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो स्वयं ही इस बात का फ़ैसला करिए क्योंकि आप रज़ियल्लाहु अन्हो अनुभवी और अवगत हैं। तल्हा यह कह कर बैठ गए परन्तु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो मश्वरा लेना चाहते थे। फ़रमाया : लोगो कुछ कहो क्योंकि आज का अवसर ऐसा है जिसके परिणाम लम्बे समय तक के हैं। इस पर हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो खड़े हुए और फ़रमाया हे अमीरुल मौमेनीन रज़ियल्लाहु अन्हो मेरी राय यह है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो शाम और यमन में ये अहकामात भेज दें कि वहां की इस्लामी फ़ौजें ईरान की तरफ़ रवाना हों। (तारीख़ अल् तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 523 - 524 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) इसी तरह बस्रा की फ़ौजें को आदेश भेज दें कि वहां से भी फ़ौजें रवाना हो जाएं और आप रज़ियल्लाहु अन्हो ख़ुद यहां से हिजाज़ की फ़ौजें को लेकर कूफ़ा की तरफ़ रवाना हूँ। (अख़बारुल तिवाल, नहाविंद, पृष्ठ 193 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.) इस सूरत में वे जो दुश्मन की अधिक संख्या के ख़तरे का एहसास आप रज़ियल्लाहु अन्हो को है वह दूर हो जाएगा। यह अवसर वाक़ई ऐसा है जिसके परिणाम लम्बे समय तक के होंगे। इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हो की इस में ख़ुद अपनी राय और अपने सथियों के साथ मौजूदगी ज़रूरी है।

(तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 524 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

अर्थात ख़ुद जाना चाहिए फ्रंटलाइन पर। हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो की ये तजवीज़ मज्लिस के अक्सर लोगों को पसंद आई और मुस्लमान हर तरफ़ से बोले कि यह ठीक है। (अख़बारुल तिवाल, पृष्ठ 193 वुक़अतुन निहावंद, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

इसको भी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने माना नहीं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि मज़ीद मश्वरा दो। फिर हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो खड़े हो गए। एक लंबी तक़रीर की जिसमें फ़रमाया अमीरुल मौमेनीन रज़ियल्लाहु अन्हो यदि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने शाम की फ़ौजें को वहां से हट जाने का हुक्म दिया तो वहां रूमी हुकूमत का क़बज़ा हो जाएगा और यदि यमन से इस्लामी फ़ौजें हट आएं तो हब्शा की हुकूमत वहां क़बज़ा कर लेगी। यदि आप रज़ियल्लाहु अन्हो स्वयं यहां से रवाना हुए तो देश के किनारों से मुस्लमान आप रज़ियल्लाहु अन्हो का नाम सुनकर आप रज़ियल्लाहु अन्हो का साथ देने के लिए उमड़ पड़ेंगे और जिस तरह के ख़तरे के मुक़ाबले के लिए आप रज़ियल्लाहु अन्हो जा रहे हैं इस से ज़्यादा ख़तरा मुल्क ख़ाली हो जाने की वजह से ख़ुद यहां पैदा हो जाएगा। इस के बजाय हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो ने तजवीज़ यह दी कि आप बस्रा यह आदेश भेजें कि कल फ़ौज के तीन हिस्से कर दिए जाएं। एक हिस्सा तो इस्लामी आबादी में मकान और अतराफ़ की हिफ़ाज़त के लिए छोड़ा जाए। एक हिस्सा इन मफ़्तूहा इलाक़ों में निर्धारित कर दिया जाए जिनसे सुलह हो चुकी हैता कि जंग के वक़्त वहां के लोग वादे तोड़े करके बग़ावत न कर बैठें और एक हिस्सा मुस्लमानों के लिए, कूफ़ा वालों की सहायता के लिए रवाना कर दिया जाए। (तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 524-523 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) इसी तरह कूफ़ा वालों को लिख दें कि एक हिस्सा फ़ौज का वहीं मुक़ीम रहे और दो हिस्से दुश्मन के मुक़ाबले के लिए रवाना हूँ।

और इसी तरह शाम की फ़ौजें को हुक्म भेज दें कि दो हिस्से फ़ौज-ए-शाम में मुक़ीम रहे और एक हिस्सा ईरान रवाना कर दिया जाए और इस किस्म के अहकाम उम्मान और मुल्क के दूसरों इलाक़ों और शहरों के नाम सादिर कर दिए जाएं।

(अख़बारुल तिवाल, वुक़अतुन निहावंद ,पृष्ठ 193 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)

आप रज़ियल्लाहु अन्हो का ख़ुद जंग पर जाना इसलिए उचित नहीं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो की पोज़ीशन तो उस लड़ी की सी है जिसमें मोती पिरोए होते हैं। यदि लड़ी खुल जाए तो मोती बिखर जाएंगे और फिर कभी इकट्ठे नहीं होंगे और फिर यदि ईरानियों को यह मालूम हुआ कि ख़ुद हाकिम-ए-अरब जंग पर आया है तो वे अपनी पूरी ताक़त लगा देंगे और अपना पूरा ज़ोर लगा कर मुक़ाबला के लिए आएँगे। और यह जो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने दुश्मन की फ़ौजें की नक़ल और हरकत का वर्णन किया है तो ख़ुदा तआला आप रज़ियल्लाहु अन्हो की नक़ल और हरकत के मुक़ाबला में दुश्मन की नक़ल और हरकत को सख़्त नापसंदीदगी की नज़र से देखता है और वह अर्थात अल्लाह तआला जिस चीज़ को नापसंद करता है उस को बदल डालने की बहुत क़ुदरत रखता है। और यह जो आप रज़ियल्लाहु अन्होने दुश्मन की संख्यां की ज़्यादती का वर्णन किया है तो माज़ी में हमारी रवायात कसरत-ए-संख्या के बल पर लड़ाई करना नहीं बल्कि हमारी जंग ख़ुदाई सहायता के भरोसे पर होती है और हमारे मुआमले में विजय और शिकस्त फ़ौज की कसरत और क़िल्लत पर नहीं। यह तो ख़ुदा का देन है जिसको ख़ुदा ने ग़ालिब किया है और उस का लश्कर है जिसकी उसने सहायता की और मलायका के माध्यम से उनकी वह सहायता की कि इस से यह स्थान हासिल हो गया है। हम से ख़ुदा तआला का वादा है अल्लाह अपने वादे को ज़रूर पूरा करेगा और अपने लश्कर की सहायता करेगा।

(तारीख़ अल् तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 523 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि हाँ यह ठीक है कि यदि मैं ख़ुद रवाना हुआ तो उधर मुस्लमान समस्त किनारों से टूट पड़ेंगे और इधर ख़ुद ईरानी पूरे ज़ोर से अपने साथियों की सहायता के लिए निकलेंगे और यह कहेंगे कि अरब का सबसे बड़ा हाकिम ख़ुद मैदान-ए-जंग में निकला है। यदि इस युद्ध को हमने जीत लिया तो मानो सारे अरब को मार लिया। इस वजह से मेरा जाना उचित नहीं। अर्थात कि दुश्मन यह कहेगा कि यदि हमने जीत लिया तो सारे अरब पर हमारा क़बज़ा हो गया। इस वजह से मेरा जाना उचित नहीं। आप लोग मश्वरा दें कि किस व्यक्ति को लश्कर का कमांडर बनाया जाए परन्तु ऐसे व्यक्ति का नाम लिया जाए जो इराक़ की जंगों में शरीक हो कर तजुर्बा हासिल कर चुका हो। लोगों ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को कहा कि हुज़ूर ख़ुद ही इराक़ वालों और वहां के लश्कर के सम्बन्ध में ज़्यादा इलम रखते हैं। वे लोग आपके पास वफ़द बन कर आते रहे हैं। आप रज़ियल्लाहु अन्हो को उन्हें परखने और उनसे बात चीत करने का अवसर मिला है।

(तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 524 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की तेज़ निगाह ने हज़रत नुमान बिन मुकर्रिन रज़ियल्लाहु अन्हो को इस ज़िम्मेदारी के लिए चुना गया जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बुज़ुर्ग सहाबा में से थे।

(अख़बारुल तिवाल, नहाविंद, पृष्ठ 193 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)

एक रिवायत में यह है कि हज़रत नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो मस्जिद में नमाज़ अदा कर रहे थे कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो तशरीफ़ लाए और उन्हें देखकर उनके पास जा बैठे। नुमान नमाज़ से फ़ारिग़ हुए तो आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उन्हें फ़रमाया कि मैं तुम्हें एक ओहदे पर मामूर करना चाहता हूँ। हज़रत नुमान (रज़ियल्लाहु अन्हो) बोले यदि कोई फ़ौजी ओहदा है तो मैं हाज़िर हूँ लेकिन यदि टैक्स जमा करने का काम है तो वह मुझे पसंद नहीं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि नहीं फ़ौजी ओहदा है।

(फ़ुतूहुल बुल्दान, पृष्ठ 183 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2000 ई.)

लेकिन जो बात हक़ायक़ से ज़्यादा क़रीब लगती है वह तिब्री की यह रिवायत है। निहावनंद के महाज़ पर हज़रत नुमान (रज़ियल्लाहु अन्हो) बिन मुकर्रिन रज़ियल्लाहु अन्हो को निर्धारित करने के बारे में जो तबरी में लिखा है जैसा कि मैंने कहा वह यह है। इब्ने इसहाक़ कहते हैं कि निहावनंद के वाक़ियात में यह भी वर्णित है कि नुमान (रज़ियल्लाहु अन्हो) बिन मुकर्रिन रज़ियल्लाहु अन्हो किस पर आमिल निर्धारित थे। उन्होंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में लिखा कि साद बिन अबी वकास रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुझे ख़राज की वसूली पर लगाया हुआ है जबकि मुझे जिहाद पसंद है और इस की इच्छा और रग़बत है। इसलिए हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने साद बिन अबी वकास रज़ियल्लाहु अन्हो को लिखा कि नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो ने मुझे लिखा है कि आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने उसे ख़राज की वसूली पर लगाया हुआ है जबकि उसे यह काम नापसंद और जिहाद में रग़बत है। इसलिए उन्हें निहावनंद में अहम तरीन महाज़ पर भेज दें। उद्देश्य यह अहम कमान हज़रत नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो बन मुकर्रिन रज़ियल्लाहु अन्हो के सपुर्द हुई और वह दुश्मन के मुक़ाबले के लिए रवाना हुए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब वह शायद कूफ़ा में थे उन्हें यह पत्र लिखा। यह पत्र भी इस बात की सहायता करता है कि वह मदीना में नहीं थे बल्कि कूफ़ा में थे तो उस वक़्त यह पत्र लिखा और पत्र इस तरह शुरू किया। बिस्मिल्ला हिर्रहमान निर्रहीम। नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो बिन मुक़र्रिन् के नाम। अस्सलामो अलैकुम। फिर तहरीर फ़रमाया कि मैं ख़ुदा तआला

की प्रशंसा करता हूँ जिसके अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं। इब के बाद मुझे सूचना मिली है कि ईरानियों का एक ज़बरदस्त लश्कर शहर निहावनंद मैं तुम्हारे मुक़ाबले के लिए जमा हुआ है। मेरा यह पत्र जब तुम्हें मिले तो ख़ुदा तआला के हुक्म और उसकी सहायता और नुसरत के साथ अपने साथी मुस्लमानों को लेकर रवाना हो जाओ परन्तु उन्हें ऐसे ख़ुशक क्षेत्र में न ले जाना जहां चलना मुश्किल हो। उनके अधिकार अदा करने में कमी न करना ईश्वर न करे वे नाशुक्रगुज़ार बनें और न ही किसी दलदल के क्षेत्र में ले जाना क्योंकि एक मुस्लमान मुझे एक लाख दीनार से ज़्यादा महबूब है। वस्सलामों अलेयका

इस हुक्म के निर्वाह में हज़रत नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो दुश्मन के मुक़ाबले के लिए रवाना हुए। आप रज़ियल्लाहु अन्हो के साथ में कुछ मुमताज़ और बहादुर मुस्लमान उदाहरणता हुज़ै बिन यमन, इब्ने उमर, जरीर बिन अब्दुल्लाह बिजली, मुग़ीरा बिन शौबा, अम्र बिन मादी करीब, तुलेह बिन ख़ूवेलद असदी और केस बिन मकशूह मुराद भी थे।

(तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 518 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने हिदायत की थी कि यदि नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो बन मुक़र्रिन् शहीद हो जाएं तो अमीर, हुज़ैफ़ा बिन यमान होंगे। उनके बाद जरीर बिन अब्दुल्लाह बिजली। उनके बाद हज़रत मुग़ीरा बिन शुअबा और उनकी शहादत पर अशअस बिन क़ैस। अम्र बिन मादी करीब और तलीहा बिन ख़ूवेलद के बारे में नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह लिखा कि अम्र बिन मादी करब और तलीहा बिन ख़ूवीलद दोनों तुम्हारे साथ हैं। ये दोनों अरब के शहसवार हैं। उनसे जंगी उमूर में मश्वरा लेते रहना परन्तु उनको किसी काम में अफ़्सर न बनाना। (अख़बारुल तिवाल, वुक़अतुन निहावंद, पृष्ठ 194 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001ई.)

बहरहाल इस्लामी लश्कर रवाना हुआ। हज़रत नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो ने जासूसों के माध्यम से मालूम कर लिया था कि निहावनंद तक रास्ता साफ़ है जहां दुश्मन का लश्कर जमा था। (तारीख़ अल् तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 525 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

इससे पूर्व जो सूचना मिली थीं उनसे मालूम होता था कि दुश्मन बहुत बड़ी संख्या में जमा हो रहा है। इतिहासकारों ने इस लश्कर की संख्या साठ हज़ार और एक लाख भी लिखी है।

(फ़ुतूहुल बुल्दान, पृष्ठ 183 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2000 ई.)

परन्तु बुख़ारी की जो रिवायत है इस के अनुसार यह संख्या चालीस हज़ार थी।

(सही बुख़ारी, किताब अल् जिज़या वल मवाद, बाब अल् जिज़या वल मवाद मा अहले ज़िम्मा अल् हरब 3159)

अर्थात जो पहले साठ हज़ार या लाख है ये बढ़ोतरी है। बुख़ारी के अनुसार तो दुश्मन की संख्या चालीस हज़ार थी। दुश्मन ने चाहा कि किसी व्यक्ति को बात चीत के लिए भेजा जाए। हज़रत मुग़ीरा बिन शोबा तशरीफ़ ले गए। ईरानियों ने बड़ी शान और शौकत से मज्लिस आयोजित की। ईरानी सिपहसालार सिर पर ताज पहने सुनहरी तख़्त पर मुतमक्किन था। दरबारी ऐसे हथियार लगाए बैठे थे कि देखकर आँखें ख़ीरा होती थीं। अनुवादक मौजूद था। ईरानी सिपहसालार ने वही पुरानी कहानी दुहराई। अहल-ए-अरब की ज़िंदगी के हर पहलू के लिहाज़ से रज़ील हालत का वर्णन किया और कहा कि मैं अपने सरदारों को जो मेरे निकट बैठे हैं इसलिए तुम लोगों को ख़त्म कर देने का हुक्म नहीं देता कि मैं नहीं चाहता कि तुम्हारे गंदे शरीरों से उनके तीर अपवित्र हों। (नऊज़ूबिल्लाह)। यदि अब भी तुम वापस चले जाओ तो हम तुम्हें छोड़ देते हैं अन्यथा फिर मैदान-ए-जंग में तुम्हारी लाशें नज़र आयेंगी। दुश्मन की इन उपहास पूर्ण धमकियों से क्या होता था। हज़रत मुग़ीरह रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया कि अब वह ज़माना गया जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आने से पहले होता था। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आमद ने नक़्शा ही बदल दिया है।

(तारीख़ अल् तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 520 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

राजदूत का कार्य नाकाम हुआ बहरहाल और दोनों लश्कर युद्ध के लिए तैयार हुए। इस्लामी लश्कर के मुक़द्दमे पर नईम बिन मुकर्रिन रज़ियल्लाहु अन्हो निर्धारित थे। बाज़ुओं की कमान हुज़यफ़ह बिन यमन और सुवेद बिन मुक़र्रिन् के हाथ में थी। मुजर्रदा के अफ़्सर काअका बिन अम्र थे। मजुर्दा घुड़सवारों की जो फ्रंटलाइन के घुड़सवारों का रिसाला है उसको कहते हैं और लश्कर का पिछ्ला हिस्सा मुजाशे की सरकर्दगी में था। (तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 525 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

झड़पें शुरू हो गईं परन्तु मैदान-ए-जंग की सूरत-ए-हाल मुस्लमानों के लिए सख़्त हानिप्रद थी क्योंकि दुश्मन ख़ंदक़ों, क़िलों और मकानों की वजह से महफ़ूज़ था। मुस्लमान खुले मैदान में थे। दुश्मन जब अपने लिए उचित देखता अचानक बाहर निकल कर हमला कर देता और फिर वापस अपने महफ़ूज़ स्थानों में दाख़िल हो जाता।

(तारीख़ अल् तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 526 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

असलाह के लिहाज़ से दुश्मन की यह हालत थी कि एक रावी का वर्णन है कि मैंने उन्हें एक जगह गुज़रते देखा ऐसे मालूम होता था मानो लोहे के पहाड़ हैं।

(तारीख़ अल् तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 520 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

इन हालात को देखकर इस्लामी लश्कर के सिपहसालार नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो बन मुक़र्रिन् ने एक मश्वरे की मज्लिस आयोजित की जिसमें लश्कर के अनुभवी और तदबीर करने वाले लोगों को बुलवाया और उनसे मुख़ातब हो कर बोले। आप लोग देख रहे हैं कि किस तरह दुश्मन अपने क़िलों, ख़ंदक़ों और इमारतों की वजह से महफ़ूज़ बैठा हुआ है। जब उस की इच्छा होती है बाहर निकलता है और मुस्लमान उस वक़्त उससे लड़ाई नहीं कर सकते जब तक ख़ुद उस की इच्छा बाहर निकल कर मुक़ाबला करने की न हो।

(तारीख़ अल् तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 526 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

उधर दुश्मन को सहायता भी निरंतर मिल रही है।

(अख़बारुल तिवाल, वुक़अतुन निहावंद, पृष्ठ 194 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

उन्होंने कहा कि आप देख रहे हैं कि मुस्लमान इस सूरत-ए-हाल से किस मुश्किल में ग्रस्त हैं। अब क्या तरीक़ चुना जाए कि देर किए बग़ैर हम दुश्मन को खुले मैदान में आकर मुक़ाबला के लिए मजबूर कर दें। सिपहसालार की इस बात को सुन कर उस मज्लिस में सबसे वृद्ध व्यक्ति अम्र बिन सुबय्य बोले। वे क़िलों में महसूर हैं। उन्होंने कहा कि दुश्मन क़िलों में महसूर है और मुहासिरा लंबा हो रहा है और यह अमर इस्लामी लश्कर की निसबत दुश्मन पर ज़्यादा गिरां और तकलीफ़-दह है। इसलिए आप इस तरह चलने दीजीए और मुहासिरा लंबा करते चले जाएं। हाँ उनमें जो लड़ने निकलते हैं उनसे मुक़ाबला जारी रखा जाए परन्तु अम्र बिन सुबय्य की यह तजवीज़ मज्लिस ने मंज़ूर नहीं की। इस के बाद अम्र बिन मअदी क्रिब ने कहा घबराने और डरने की कोई बात नहीं। पूरी ताक़त से आगे बढ़कर दुश्मन पर हमला किया जाए परन्तु यह तजवीज़ भी रद्द कर दी गई। तजुर्बाकारों ने यह एतराज़ किया कि आगे बढ़कर हमला करने की सूरत में हमें इन्सानों से मुक़ाबला नहीं करना पड़ता बल्कि दीवारों से टक्कर लेनी पड़ती है। ये दीवारें हमारे ख़िलाफ़ दुश्मन को सहायता देती हैं। अर्थात क़िला में बंद हैं। दुश्मन तो सामने नहीं है। इस पर तल्हा खड़े हुए और बोले मेरे नज़दीक इन दोनों साहिबों की राय दरुस्त नहीं है। मेरी राय यह है कि एक छोटा सा रिसाला दुश्मन की तरफ़ भेजा जाए जो क़रीब जा कर तीर-अंदाज़ी करके कुछ लड़ाई भड़काने की सूरत पैदा करे। इस रिसाले के मुक़ाबला के लिए दुश्मन बाहर निकलेगा और हमारे रिसाले का मुक़ाबला करेगा। इस सूरत में हमारा रिसाला पीछे हटना शुरू कर दे और यह ज़ाहिर करे गोया वे शिकस्त खा कर भाग रहा है। उम्मीद है कि दुश्मन विजय की लालच में बाहर निकलेगा और जब वे बाहर खुले मैदान में आ जाए तो हम उस से अच्छी तरह निपट लेंगे।

(तारीख़ अल् तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 526 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

हज़रत नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो ने यह तजवीज़ मंज़ूर कर ली और उसे हज़रत काअका रज़ियल्लाहु अन्हो के सपुर्द किया कि इस तजवीज़ को अमली जामा पहनाए। उन्होंने तलीहा की तजवीज़ पर अमल किया और बिल्कुल वैसा ही ज़हूर में आया जो तलीहा का ख़्याल था। काअका आहिस्ता-आहिस्ता शिकस्त खा कर हटते चले गए और दुश्मन का लश्कर विजय के नशे में बढ़ता चला आया यहाँ तक कि सब अपने क़िलों से बाहर निकल आए। केवल दरवाज़ों पर निर्धारित करदा पहरेदार, पहरा देने वाले सिपाही अपने महफ़ूज़ स्थानात में अंदर रह गए। दुश्मन की फ़ौज अपनी मुस्तहकम पोज़ीशनें से बाहर आकर बढ़ते बढ़ते असल इस्लामी लश्कर से इस क़दर क़रीब आगई कि इस के तीरों से बाअज़ मुस्लमान ज़ख़मी हो गए परन्तु हज़रत नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो ने अभी आम मुक़ाबले की इजाज़त नहीं दी थी। हज़रत नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो आशिक़-ए-रसूल थे और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का आम मामूल यह था कि यदि सुबह जंग शुरू न हो तो फिर ज़वाल के बाद लड़ाई का इक़दाम फ़रमाते जबकि गर्मी की शिद्दत न रहती और ठंडी हवाएं चलने लगतीं। कुछ मुस्लमान मुक़ाबले के लिए बेक़रार थे और दुश्मन

के तीरों से कुछ लोगों के ज़ख़मी हो जाने से यह जोश और भी बढ़ गया था। वे सरदार-ए-लश्कर की ख़िदमत में जा कर इजाज़त मांगते और आप रज़ियल्लाहु अन्हो कहते कि ज़रा और इंतिज़ार करो अर्थात कमांडर ने उनको कहा कि और इंतिज़ार करो। हज़रत मुग़ीरा बिन शौबा रज़ियल्लाहु अन्हो बेक़रार हो कर बोले। मैं होता तो मुक़ाबले की इजाज़त दे देता। नुअमान ने जवाब दिया ज़रा देर और सब्र करो। बेशक जब आप अमीर होते थे तो उम्दा इंतिज़ाम करते थे परन्तु आज भी ख़ुदा हमें और आपको रुस्वा नहीं करेगा। जो चीज़ आप जल्दी करके हासिल करना चाहते हैं हमें उस को तहम्मुल से काम लेकर हासिल करने की उम्मीद है।

जब दोपहर ढलने को थी तो हज़रत नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो घोड़े पर सवार हुए और सारे लश्कर का चक्कर लगाया और हर झंडे के पास खड़े हो कर निहायत पुरजोश तक़रीर की। (तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 526 - 527 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) और निहायत दर्दनाक शब्दों में अपनी शहादत के लिए दुआ की जिसको सुनकर लोग रोने लगे। इसके बाद आपने हिदायत की कि मैं तीन मर्तबा तकबीर कहूँगा और साथ ही झंडा हिलाऊँगा। पहली मर्तबा हर व्यक्ति मुस्तइद हो जाए। दूसरी दफ़ा हथियार तौल ले अर्थात हथियारों को तैयार रखे और दुश्मन पर टूट पड़ने के लिए बिल्कुल तैयार हो जाए और तीसरी मर्तबा तकबीर कहने और झंडा हिलाने के साथ ही में दुश्मन की सफ़ों पर जा पड़ूँगा। तुम में से हर व्यक्ति अपने मुक़ाबिल की सफ़ों पर हमला कर दे। इसके बाद दुआ की कि हे ख़ुदा! अपने दीन को इज़्ज़त दे। अपने बंदों की मदद फ़र्मा और इसके बदले में नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो को पहला शहीद होने की तौफ़ीक़ अता कर। अर्थात कमांडर ने यह दुआ की। हज़रत नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो ने तीसरी बार तकबीर कही थी कि मुस्लमान दुश्मन की सफ़ों पर टूट पड़े। रावी कहता है कि जोश का यह आलम था कि किसी एक के सम्बन्ध में भी यह तसव्वुर नहीं किया जा सकता कि वे मरे या विजय हासिल किए बग़ैर वापस जाने का ख़्याल भी रखता हो।

नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो झंडा लिए ख़ुद इस तेज़ी से दुश्मन पर लपके कि देखने वालों को यूं मालूम होता था कि झंडा नहीं बल्कि कोई उक़ाब झपटा मार रहा है। उद्देश्य मुस्लमान तलवारें लेकर एक साथ हमला-आवर हुए परन्तु दुश्मन की सफ़ें भी इस रेले के सामने जमी हुई थीं। लोहे के लोहे से टकराने से सख़्त शोर हो रहा था। ज़मीन पर ख़ून बहने की वजह से मुस्लमान शहसवारों के घोड़े फिसलने लगे। हज़रत नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो जंग में ज़ख़मी हो गए थे। आप रज़ियल्लाहु अन्हो का घोड़ा भी फिसला और आप ज़मीन पर गिर पड़े। आप अपनी सफ़ैद लिबास और टोपी की वजह से नुमायां तौर पर नज़र आते थे। आपके भाई नईम बिन मुकर्रिन रज़ियल्लाहु अन्हो ने जब आपको गिरते देखा तो कमाल-ए-होशियारी से झंडा गिरने से क़बल ही उठा लिया और हज़रत नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो को कपड़े से ढांक दिया और झंडा लेकर हुज़ैफ़ा बिन यमान के पास आए जो हज़रत नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो के जांनशीन थे। हज़रत हुज़ैफ़ा नुमान बिन मुक़र्रिन् को लेकर उस स्थान पर आ गए जहां नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो थे और उस जगह झंडा बुलंद कर दिया गया और हज़रत मुगीरा रज़ियल्लाहु अन्हो के मश्वरा के अनुसार लड़ाई का नतीजा निकलने तक हज़रत नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो की वफ़ात को गुप्त रखा गया।

(तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 527 - 521 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

अख़बारुल तिवाल में लिखा है कि हज़रत नुमान बिन मुकर्रिन रज़ियल्लाहु अन्हो जब ज़ख़मी हो कर गिरे तो उनके भाई उन्हें उठा कर तम्बू में ले गए और उनका लिबास ख़ुद पहन लिया और उनकी तलवार लेकर उनके घोड़े पर सवार हो गए और अक्सर लोगों को यही ग़लतफ़हमी रही कि यह हज़रत नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो हैं।

(अख़बारुल तिवाल, वुक़अतुन निहावंद, पृष्ठ 195 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2001 ई.)

तबरी के लेखक ने निहायत नाज़ुक मरहले पर अमीर के हुक्म की आज्ञाकारिता की उम्दा मिसाल लिखी है। हज़रत नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो ने ऐलान कर दिया था कि यदि नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो भी क़तल हो जाए तो कोई व्यक्ति लड़ाई छोड़कर उस की तरफ़ मुतवज्जा न हो बल्कि दुश्मन से मुक़ाबला जारी रखे। मुअक़ल कहते हैं कि जब हज़रत नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो गिरे तो मैं आप रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आया फिर मुझे आप रज़ियल्लाहु अन्हो का हुक्म याद आया और मैं वापस चला गया। (तारीख़ अल् तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 533 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)और लड़ाई शुरू कर दी।

बहरहाल लड़ाई दिन-भर बड़े ज़ोर से जारी रही परन्तु रात होते ही दुश्मन के पांव उखड़ गए और मैदान मुस्लमानों के हाथ आया और ईरानियों के बड़े बड़े सरदार मारे गए।

(तारीख़ तिब्री भाग 2 पृष्ठ 527 - 528 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

मुअक़ल कहते हैं कि विजय के बाद में हज़रत नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आया। उनमें रमक़ बाक़ी थी। थोड़ी सी सांस ले रहे थे। मैंने उनका चेहरा अपनी छागल से धोया। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने मेरा नाम पूछा और दरयाफ़त किया कि मुस्लमानों का किया हाल है? मैंने कहा आप रज़ियल्लाहु अन्हो को ख़ुदा तआला की तरफ़ से विजय और नुसरत की बशारत हो। आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़रमाया अलहमदु लिल्लाह उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को सूचना कर दो।

(फ़ुतूहुल बुल्दान, पृष्ठ 183 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2000 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो निहायत शिद्दत से लड़ाई के नतीजा के मुंतज़िर थे। जिस रात लड़ाई की आशा थी वह रात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने निहायत बेचैनी से जाग कर गुज़ारी। (तारीख़ अल् तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 528 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) रावी कहते हैं कि इस तकलीफ़ से दुआ में व्यस्त रहे कि मालूम होता कि कोई हामिला औरत तकलीफ़ में है। क़ासिद विजय की ख़ुशख़बरी लेकर मदीना पहुंचा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने अलहमदु लिल्लाह कहा और नुमान रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़ैरीयत पूछी। क़ासिद ने उनकी वफ़ात की ख़बर सुनाई तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को सख़्त सदमा हुआ। (तारीख़ अल् तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 521 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.) और सिर पर हाथ रखकर रोते रहे।

(फ़ुतूहुल बुल्दान, पृष्ठ 184 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2000 ई.)

क़ासिद ने दूसरे शहीदों के नाम सुनाए और कहा कि अमीरुल मौमेनीन रज़ियल्लाहु अन्हो और भी बहुत से मुस्लमान शहीद हुए हैं जिन्हें आप रज़ियल्लाहु अन्हो नहीं जानते। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो रोते हुए बोले, उमर उन्हें नहीं जानता तो उन्हें इस का कोई नुक़्सान नहीं ख़ुदा तो उन्हें जानता है।

(तारीख़ अल् तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 521 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

जबकि मुस्लमानों में ग़ैर-मारूफ़ हैं परन्तु ख़ुदा ने उनको शहादत देकर सम्मानित कर दिया है। अल्लाह उनको पहचानता है। उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के पहचानने से उन्हें क्या उद्देश्य। युद्ध के बाद मुस्लमानों ने हमाज़ान तक दुश्मनों का पीछा किया। यह देखकर ईरानी सरदार ख़ुसरो शनूम ने हमाज़ान और दसतबी के शहरों की तरफ़ से इस ज़मानत पर मुसालहत कर ली कि इन शहरों से मुस्लमानों पर हमला नहीं होगा। इस्लामी लश्कर ने शहर निहावनंद पर क़बज़ा कर लिया।

(तारीख़ अल् तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 528 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2012 ई.)

निहावनंद की विजय अपने परिणाम के लिहाज़ से बहुत अहम थी। इसके बाद ईरानियों को एक जगह एकत्र हो कर मुक़ाबला करने का अवसर नहीं मिला और मुस्लमान इस विजय को विजय फ़तह अल् फतूह के नाम से याद करने लगे।

(फ़ुतूहुल बुल्दान, पृष्ठ 184 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2000 ई.)

ईरान पर आम लश्कर कुशी की तजवीज़ भी हुई। किस तरह हुई? इस बारे में लिखा है कि जबकि अख़लाक़ी और क़ानूनी नुक़्ता-ए-नज़र से मुस्लमान इस अमर के बिल्कुल मजाज़ थे कि देश की अत्याचारी ताक़त को पूरी तरह तोड़ कर दम लें क्योंकि दुश्मन बार-बार हमला कर रहा था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का दर्दमंद दिल हर मरहले पर मज़ीद ख़ूँरेज़ी से मुतनफ़्फ़िर था लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को यह चीज़ पसंद नहीं थी और रहमतुल लिलआलमीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इस सच्चे ख़ादिम की हार्दिक इच्छा थी कि ईरानी सलतनत सरहदी इलाक़ों पर ही शिकस्त खा कर मज़ीद फ़ौजी कार्यवाहीयां बंद कर दे और यह जंग-ओ-जदाल का सिलसिला बंद हो जाए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने न केवल इस इच्छा का कई मर्तबा इज़हार किया बल्कि ईरान-ओ-इराक़ की फ़ौजें को ख़ुद बख़ुद किसी पेशक़दमी से पूर्णता मना कर दिया था परन्तु दुश्मन की मज़ीद फ़ौजी कार्यवाईयों और मफ़्तूहा इलाक़ों में बार-बार बग़ावत करा देने के कारण से आपकी यह इच्छा पूरी न हो सकी और महाज़-ए-जंग से आए राए देने वालों के एक वफ़द से बात चीत कर के आप रज़ियल्लाहु अन्हो इस नतीजे पर पहुंचे कि मज़ीद फ़ौजी इक़दाम किए बग़ैर कोई चारा नहीं। यह सतरह हिज्री की बात है परन्तु इसके बावजूद भी एक लंबे अरसे तक आप रज़ियल्लाहु अन्हो ने फ़ौजें को आगे बढ़ने की इजाज़त नहीं दी। परन्तु अब हालात जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है मज़ीद सब्र की इजाज़त नहीं देते थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने देख लिया था कि ये नियमित रूप से हर साल फ़ौज को भेज कर जंग की आग भड़काने का कारण बन रहा है। लोगों ने बार-बार आप रज़ियल्लाहु अन्हो की ख़िदमत में अर्ज़

किया था कि जब तक वह अपनी सलतनत में मौजूद है इस रवैय्या में तबदीली नहीं करेगा और अब निहावनंद के युद्ध ने इस राय को और भी मज़बूत कर दिया था। इन हालात से मजबूर हो कर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने युद्ध निहावनंद इक्कीस हिज्री के बाद फ़ौजी पेशक़दमी की इजाज़त दे दी थी और कुल ईरान की विजय के लिए प्लान (plan) बना कर फ़ौज कूफ़ा रवाना की जो इन जंगी सरगर्मीयों के लिए छावनी की हैसियत रखती थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने ईरान के मुख़्तलिफ़ इलाक़ों के लिए मुख़्तलिफ़ सिपहसालार निर्धारित किए और मदीना से उनके लिए ख़ुद झंडे बनवा कर भिजवाए। ख़ुरासान का झंडा अहनफ़ बिन केस को, इस्ताखरा का झंडा उस्मान बिन अबू आस को, अर्दशीर और साबूर का झंडा मुजाशे बिन मसऊद को और دَارَا بَجِرْد کا سَارِیہ بن زُنَیم کو، سَجِسْتَان का आसिम बिन अम्र को और मकरावान का हाकिम बिन अम्र को भेजा और करमान का झंडा सुहेल बिन अदी को दिया। अज़र बाईजान की विजय के लिए उत्बा् बिन फर्कद बुकेयर बिन अब्दुल्लाह को झंडे भेजे और हुक्म दिया कि एक अज़र बाईजान पर दाएं तरफ़ हुल्वान से हमला करे और दूसरा बाएं तरफ़ मूसिल की तरफ़ से हमला-आवर हो। अस्फ़ान की मुहिम का झंडा अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह को प्रदान हुआ।

(मक़ाला 'तारीख़-ए-इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ी अन्ना' अज़ आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद नासिर साहिब, पृष्ठ 164 से 166)

अस्फ़ान की विजय के बारे में लिखा है कि अस्फ़ान की मुहिम अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह के सपुर्द हुई। वह निहावनंद में थे कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो का पत्र मिला कि अस्फ़ान की तरफ़ रवाना हों और हर अव्वल दस्ते का कमांडर अब्दुल्लाह बिन वरका रियाही को बनाएँ। बाज़ुओं की कमान अब्दुल्लाह बिन वर्का असदी को और इस्मा बिन अब्दुल्लाह के सपुर्द करें। अब्दुल्लाह रवाना हुए। शहर के गावं दिहात में अस्फ़ान वालों के एक लश्कर से मुक़ाबला हुआ जो ईरानी सिपहसालार उस्तंद्रा की सरकर्दगी में था। दुश्मन के हर अव्वल का अफ़्सर अर्थात जो पहला दस्ता था उस का अफ़्सर एक अनुभवी बूढ़ा शहर ब्राज़ जअज़ौया था। उसने अपने दस्तों को लेकर मुस्लमानों का मुक़ाबला किया। शदीद जंग हुई। जअज़ौया ने युद्ध किया। अब्दुल्लाह बिन वर्का ने उस को मौत के घाट उतार दिया। सख़्त लड़ाई के बाद दुश्मन शिकस्त खा कर भाग गया और सिपहसालार उसतन्द्रा ने अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह से सुलह कर ली। इस्लामी लश्कर ख़ास अस्फ़हान की तरफ़ बढ़ा जोकि हब्बी के नाम से पुकारा जाता था और शहर का घेराव कर लिया। एक दिन शहर का हाकिम फ़ाज़ुज़फ़ान बाहर निकला और अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह अमीर इस्लामी लश्कर को कहा कि हमारी फ़ौजें की लड़ाई से बेहतर है कि हम तुम आपस में लड़ें जो अपने प्रतिद्वंद्वी पर विजय हो गया वह विजय समझा जाएगा। अब्दुल्लाह ने यह तजवीज़ मंज़ूर कर ली और कहा कि पहले तुम हमला करोगे या में। फ़ाज़ुज़फ़ान ने पहले हमला किया। अब्दुल्लाह उसके सामने जमे रहे और दुश्मन के वार से केवल उनके घोड़े की ज़ीन कट गई। अब्दुल्लाह घोड़े की नंगी पुश्त पर जम कर बैठ गए और वार करने से पहले उस को सम्बोधित किया। अब ठहरे रहना। फ़ाज़ुज़फ़ान बोला कि आप कामिल और अक़लमंद और बहादुर इन्सान हैं मैं आपसे सुलह कर के शहर आपके सपुर्द करने के लिए तैयार हूँ इसलिए सुलह हो गई और मुस्लमान शहर पर क़ाबिज़ हो गए। तिब्री से मालूम होता है कि यह विजय 21 हिज्री में हुई। (तबरी, भाग नंबर 2 पृष्ठ 531 से 532)

इतिहासकार बलाज़री ने इस युद्ध में शामिल होने वाले इस्लामी लश्कर की इमारत पर अब्दुल्लाह बिन अब्दुल्लाह के बजाय अब्दुल्लाह बिन बुदील बिन वर्का खुज़ाइ का नाम लिया है। (फ़ुतूहुल बुल्दान, पृष्ठ 188)

परन्तु तिब्री के इतिहासकार ने लिखा है कि कुछ लोगों ने अब्दुल्लाह बिन वर्का सादी को जो इस युद्ध में शरीक थे और एक बाज़ू के कमांडर थे अब्दुल्लाह बिन बुदील बिन वर्का से मिला दिया है। हालाँकि अब्दुल्लाह बिन बुदील, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में कम उमर थे और सिफ़्फ़ीन की जंग में जब वह क़तल हुए तो उनकी उमर केवल चौबीस वर्ष थी।

(मक़ाला "तारीख़-ए-इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद नासिर साहिब, पृष्ठ 166 से 168)

हमाज़ान की बग़ावत और पुन: विजय। निहावनंद के बाद मुस्लमानों ने हमाज़ान भी विजय कर लिया था जबकि हमाज़ान वालों ने सुलह के मुआहिदे को तोड़ दिया और आज़रबाईजान से भी फ़ौजी सहायता हासिल कर के लश्कर तैयार कर लिया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने नईम बिन मुक़र्रिन को बारह हज़ार के लश्कर के साथ वहां जाने की हिदायत फ़रमाई। एक सख़्त युद्ध के बाद मुस्लमानों ने शहर विजय कर लिया।

(उद्धरित सीरत अमीरुल मौमिनीन उमर बिन ख़त्ताब अज़ अलसलाबी, पृष्ठ 431 दारुल मारूफ़ बेरूत 2007 ई.)

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो को इस युद्ध के नतीजा की ख़ास फ़िक्र थी। क़ासिद विजय की ख़ुशख़बरी लाया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो ने उस के माध्यम से नईम बिन मुक़र्रिन को हुक्म भेजा कि हमाज़ान में किसी को अपना क़ायमक़ाम बना कर ख़ुदरे की तरफ़ बढ़ें और वहां जो लश्कर है उस को शिकस्त देकर रै में ही क़ियाम करें क्योंकि इस शहर को इस समस्त क्षेत्र में मर्कज़ी हैसियत हासिल है।

(मक़ाला "तारीख़-ए-इस्लाम बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो अज़ आदरणीय सय्यद मीर महमूद अहमद नासिर साहिब, पृष्ठ 169)

बहरहाल अभी और दूसरी जंगों का भी वर्णन है और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो के ज़माने में जो फ़ुतूहात हुईं उनका वर्णन चल रहा है। इंशा अल्लाह भविष्य यह वर्णन होगा।

इस वक़्त में बाअज़ मरहूमीन का भी वर्णन करूँगा और जुम्मा की नमाज़ के बाद उनका जनाज़ा भी पढ़ाऊंगा। उनमें जो पहला वर्णन है वह मुहम्मद दियान्तूनू साहिब इंडोनेशिया का है जो 15 जुलाई में 46 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए थे। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनकी पत्नी ने लिखा कि मरहूम एक ग़ैर अहमदी ख़ानदान में पैदा हुए लेकिन आप को बचपन से मस्जिद जाने का शौक़ था और वह दूसरे बच्चों से अलग-थलग थे। देर-देर तक मस्जिद में रहना, इस्लाम की तालीम सीखना और अल्लाह तआला का वर्णन करना उन्हें पसंद था। कहते थे कि ये सब उनके लिए हक़ीक़ी नेअमत थी ताकि अल्लाह तआला का प्रेम हासिल हो जाए। गांव में उनका एक दोस्त था जो अहमदी था। जब यह हाई स्कूल में पढ़ते थे तब उनके इस दोस्त से उनको जमाअत के बारे में पता चला। उन्हों ने जमाअत चीलेदोगु (ciledug) और चीरीबोन मैं बैअत की। जब उनके पिता साहिब को उनकी बैअत का पता चला तो उन्हें बहुत ग़ुस्सा आया और घर से निकाल दिया क्योंकि वह समझते थे कि उनका बेटा गुमराह हो गया है। बहरहाल घर का दरवाज़ा भी उनके लिए नहीं खोला जाता था। उनको बाहर सोना पड़ता था। कुछ देर यह इसी तरह चलता रहा फिर कुछ माफ़ भी कर दिया, घर भी आने लगे बहरहाल 1997 ई. में लोकल जमाअत के ओहदेदारान ने उनको जामिआ जाने की तजवीज़ दी क्योंकि उनके नज़दीक वह मुबल्लिग़ बनने के योग्य थे। उनको जवानी से ही तब्लीग़ का शौक़ था। बहरहाल उन्होंने जामिआ में दाख़िला लिया और 2002 ई. में जामिआ से फ़ारिग़ हुए। उनकी प्रथम चयन जमाअत जय ने पोंतोह (jeneponto) में हुई। क्योंकि उनको तब्लीग़ का शौक़ था इसलिए दाईन के साथ तब्लीग़ के लिए गांव गांव जाते थे। अल्लाह के फ़ज़ल से एक गांव में सैंकड़ों बैअतें करवाने की भी तौफ़ीक़ पाई और जब मिशन हाऊस की तामीर शुरू हुई तो आप ख़ुद भी काम करते थे। उस वक़्त जमाअत में इस जगह पर कोई मिशन हाऊस नहीं था। उनकी पत्नी कहती हैं मुझे याद है कि हम बहुत ही सादा किराए के मकान में रहते थे। इतना सादा था कि घर में सामान भी कोई नहीं होता था। घर का कुल सामान क्या था। केवल एक कम्बल था, एक तकिया था, एक चटाई थी जिस पर सो जाते थे और खाना पकाने के लिए जो बर्तन था इसी से काम चलाते थे। हर काम इसी से लेते। इसी से खाना पकाते थे और इसी में पानी इत्यादि रखते थे। एक दिन कहती हैं कि रईस अल्तबलीग़ सीयूती अज़ीज़ साहिब और सुबाई मुबल्लिग़ सैफुल अयून साहिब हमारे घर आए। घर की हालत देखकर दोनों हैरान हो गए। बहरहाल इस के बाद जमाअत जीने पेंतोहा ने मिशन हाऊस बनाने के लिए मर्कज़ से दरख़ास्त की और वहां मिशन हाऊस की तामीर भी हो गई। इस के बाद मस्जिद भी वहां बन गई। पहले ये लोग

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

मुस्लमानों की एक मुशतर्का मस्जिद थी वहां नमाज़ पढ़ा करते थे। फिर मुख़ालिफ़त की वजह से वहां नमाज़ पढ़नी बंद हो गई। फिर एक घर में नमाज़ पढ़ते थे और मस्जिद बनाने में भी बहुत सी रुकावटें थीं। मस्जिद बनाना चाहते थे लेकिन मिस्त्रीयों ने काम करने से इंकार कर दिया। गांव का जो सरदार था उसने भी धमकी दी कि नहीं बनने दूँगा। बहरहाल इन समस्त रुकावटों के बावजूद उन्होंने हिम्मत नहीं हारी और बड़े मज़बूत इरादे के साथ मस्जिद की तामीर करवाते रहे और यदि मज़दूर इत्यादि नहीं आते थे तो ख़ुद्दाम, इतफ़ाल से वक़ार-ए- अमल करवाते थे बल्कि ग़ैर अहमदी बच्चे भी वक़ा-ए-अमल में शामिल हो जाते थे जिनसे अच्छा ताल्लुक़ था और यूं यह मस्जिद बन गई। यह कहती हैं जब जकार्ता में उनकी तक़र्ररी हुई तो वहां भी बहुत ज़्यादा मुख़ालिफ़त थी लेकिन वहां सेलाब आया तो ग़ैर अहमदी मुख़ालिफ़ पनाह लेने के लिए हमारी मस्जिद में आने लग गए और कहते हैं दो साल लगातार सेलाब आता रहा और ये लोग हमारी मस्जिद में ही पनाह लेते रहे। एक तरफ़ मुख़ालिफ़त करते रहे फिर पनाह लेने के लिए आते रहे। फिर कुछ व्यवहार ठंडा हो गया। उनके कारनामों में से एक नुमायां कारनामा ये थे कि उन्होंने इंडोनेशिया में रेडीयो और इंटरनैट के माध्यम जमाअत का पैग़ाम और ख़लीफ़-ए-वक़्त के खिताबात का अनुवाद सीधे पेश करने का इंतिज़ाम करवाया। इस वक़्त यहां यूट्यूब के माध्यम ख़ुतबे का लाईव तर्जुम्मा अभी शुरू नहीं हुआ था। बहरहाल उन्होंने सारी ज़िंदगी बड़ी मेहनत की और एक मिसाली मुबल्लिग़ सिलसिला थे। पीछे रहने वालों में में पत्नी के अतिरिक्त पाँच बच्चे शामिल हैं। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए दर्जात बुलंद फ़रमाए। उनके बच्चों को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

दूसरा जनाज़ा साहिबज़ादा फ़रहान लतीफ़ साहिब शिकागो अमरीका का है कुछ अरसा हुआ उनकी वफ़ात हुई थी। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। मरहूम हज़रत साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ साहिब शहीद रज़ियल्लाहु अन्हो के पड़ पोते थे। मरहूम शिकागो जमाअत के सक्रिय मेम्बर थे। हर समय सहायता और ख़िदमत के लिए तैयार रहते थे। चेहरे पर मुस्कुराहट और सलाम करने में पहल आप की नुमायां विशेषता थी। मस्जिद में कोई भी बड़ा छोटा काम होता उस के लिए तुरंत लब्बैक कहते और ख़िदमत के लिए हमेशा सफ़े अव्वल में होते थे। शिकागो जमाअत में आडीटर के फ़रायज़ बड़ी ख़ुश-उस्लूबी से सरअंजाम देते रहे। मरहूम मूसी थे। पीछे रहने वालों में में तीन छोटे बच्चे और बूढ़े माता पिता शामिल हैं। वफ़ात के वक़्त उनकी आयु 45 वर्ष थी। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। बच्चों को भी जमाअत से हमेशा जोड़े रखे।

अगला वर्णन मुल्क़ मुबश्शिर अहमद साहिब लाहौर का है। काफ़ी अरसा हुआ 21 नवंबर को उनकी वफ़ात हो गई थी लेकिन जनाज़ा नहीं अदा किया गया था। उनके बेटे ने लिखा था कि उनका जनाज़ा पढ़ दिया जाए। यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी और मुफ़स्सिर-ए-क़ुरआन हज़रत मौलाना ग़ुलाम फ़रीद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो के बेटे थे। दाऊद ख़ैल ज़िला मियांवाली में अमीर जमाअत के अतिरिक्त हैदराबाद में मुख़्तलिफ़ जमाअती ओहदों पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। क़ुरआन-ए-करीम की डिक्शनरी की तकमील में भी उनको काम का अवसर मिला जिसको ख़लीफ़तुल मसीह अल् राबे रहमहुल्लाह के इरशाद की तामील में उन्होंने अपने पिता मुल्क ग़ुलाम फ़रीद साहिब की वफ़ात के बाद छोटे भाई के साथ मिलकर तर्तीब दिया। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

इन सब का जैसा कि मैंने कहा नमाज़ जनाज़ा नमाज़-ए-जुम्मा के बाद अदा करूँगा।

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

पृष्ठ 1 का शेष

के साथ पढ़े और इस तरफ़ से लापरवाही बड़ी तबाही का कारण हुआ है। परन्तु बावजूद माने न जानने के मुस्लमानों का क़ुरआन-ए-करीम को याद करते चले जाना निसंदेह इस आयत में वर्णित वादे के पूरा होने की दलील है।

आज अगर बाईबिल के सारे नुस्ख़े जला दिए जाएं तो बाईबिल के अनुसरण करने वाले उस का बीसवां भाग भी दुबारा जमा नहीं कर सकते लेकिन क़ुरआन-ए-मजीद को यह गर्व हासिल है कि अगर (मान लें जो की सम्भव नहीं) सारे नुस्ख़े क़ुरआन-ए-मजीद के संसार से नष्ट कर दिए जाएं तब भी दो तीन दिन के अंदर मुकम्मल क़ुरआन-ए-मजीद मौजूद हो सकता है और बड़े शहर तो अलग रहे हम क़ादियान जैसी छोटी बस्ती में उसे तुरंत शब्द शब्द लिखवा सकते हैं।

संसार की कोई मज़हबी किताब ऐसी नहीं कि जिसे मिटा दिया जाए और वे फिर भी महफ़ूज़ रहे सिवाए क़ुरआन-ए-पाक के।

एक माध्यम अल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त के लिए यह निर्धारित फ़रमाया कि ऐसे सामान कर दिए कि क़ुरआन-ए-मजीद अपने नुज़ूल के तुरंत बाद समस्त संसार में फैल गया और अब इस में बदलाव और तब्दीली की सम्भावना ही नहीं रही। कहा जाता है कि एक मर्तबा रूसी हुकूमत ने इरादा किया कि जिहाद की आयात निकाल कर क़ुरआन छपवाए। परन्तु उसे बताया गया कि क़ुरआन-ए-मजीद तो समस्त संसार में फैला हुआ है और यह आयात हर जगह मौजूद हैं फिर तुम उनको कैसे निकाल सकोगे। इस से वह अपने इरादों से रुकी रही।

एक माध्यम क़ुरआन-ए-मजीद की हिफ़ाज़त का यह था कि इस्लामी उलूम की बुनियाद क़ुरआन-ए-मजीद पर क़ायम हुई। इस माध्यम से उसकी हर हरकत और सकून महफ़ूज़ हो गए। उदाहरणता व्याकरण पैदा हुए तो क़ुरआन-ए-मजीद की ख़िदमत के लिए। इसलिए व्याकरण के पैदा होने की वजह यह बताई जाती है कि अबुल अस्वद दौली हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो के पास आए कि एक नया मुस्लमान ''اَنَّ اللّٰهَ بَرِیۡٓءٌ مِّنَ الۡمُشۡرِکِیۡنَ ۙ وَرَسُوۡلُهٗ'' के बजाय ''وَرَسُوۡلِهٖ'' पढ़ रहा था। जिस से डर है कि नौ मुस्लिमों को क़ुरआन-ए-मजीद के अर्थ समझ ने में मुश्किल पेश आई। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो उस वक़्त घोड़े पर सवार जा रहे थे। इसी हालत में आप उन्हें कुछ व्याकरण के क़वायद बताते चले गए और फ़रमाया कि इस किस्म के क़वायद को लिखित रूप में ले आओ, इस से उन नौ मुस्लिमों को सही तिलावत की तौफ़ीक़ मिलेगी और कुछ क़वायद बनाकर फ़रमाया : इन اُنۡحُ نَحۡوَهٗ अर्थात इसी रंग में और क़वायद तैयार कर लो। इस फ़िक़रा की वजह से अरबी ग्रेमर का नाम व्याकरण पड़ गया। फिर मुस्लमानों ने तारीख़ ईजाद की तो क़ुरआन-ए-मजीद की ख़िदमत की उद्देश्य से क्योंकि क़ुरआन-ए-मजीद में मुख़्तलिफ़ कौमों के हालात आए थे उनको जमा करने लगे तो बाक़ी संसार के हालात भी साथ ही जमा कर दिए। फिर इलमें हदीस शुरू हुई तो क़ुरआन-ए-मजीद की ख़िदमत के लिए, ता मालूम हो सके कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने क़ुरआन के क्या माने किए हैं।

फिर फ़लसफ़ा वालों के क़ुरआन-ए-मजीद पर एतराज़ात के दफ़ईया के लिए मुस्लमानों ने फ़लसफ़ा इत्यादि के उलूम की ईजाद की और इलम-ए-मंतिक़ के लिए नई परन्तु ज़्यादा शोध की राह निकाली। फिर चिकित्सा की बुनियाद भी क़ुरआन-ए-मजीद के तवज्जा दिलाने पर ही क़ायम हुई। व्याकरण में मिसालें देते थे तो क़ुरआन-ए-मजीद की आयात की। अदब में बेहतरीन मजमूआ क़ुरआन-ए-मजीद की आयात को क़रार दिया गया था। उद्देश्य हर इलम में क़ुरआन की आयात को बतौर हवाला नक़ल किया जाता था और मैं समझता हूँ कि अगर इन सब किताबों से आयात को जमा किया जाए तो उनसे भी सारा क़ुरआन जमा हो जाएगा। मुस्लमानों में क़ुरआन-ए-करीम की ख़िदमत के लिए दूसरे उलूम की तरफ़ ध्यान देने का एक ज़िमनी फ़ायदा यह भी हुआ कि पहली किताबों से तो संसारिक उल्मा का तबक़ा सख़्त बेज़ार था परन्तु मुस्लमानों में से उन उलूम के माहिर हमेशा क़ुरआन-ए-मजीद के ख़ादिम रहे हैं क्योंकि वे समझते हैं कि क़ुरआन-ए-करीम सच्चे उलूम का दुश्मन नहीं बल्कि समर्थक है।

(तफ़सीर-ए-कबीर, भाग 4 पृष्ठ 18 प्रकाशन क़ादियान 2010)

☆ ☆ ☆ ☆

प्रश्न उत्तर

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर (भाग 7)

एक विद्यार्थी ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि हम इन शा अल्लाह मैदान-ए-अमल में जा रहे हैं। वहां पहुंच कर एक मुरब्बी का सबसे पहला काम क्या होना चाहिए?

नोट : सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ विभिन्न वक़्तों में अपने लेखों और एम.टी.ए के विभिन्न प्रोग्रामों में महत्वपूर्ण विषयों के बारे में जो आदेश फ़रमाते हैं, उनमें से कुछ पाठकों के लाभ के लिए अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल के धन्यवाद के साथ प्रकाशित किए जा रहे हैं।(सम्पादक)

प्रश्न : इसी मुलाकात तिथि 31 अक्तूबर 2020 ई. में एक विद्यार्थी ने हुज़ूर अनवर की ख़िदमत अक़्दस में अर्ज़ किया कि हम इन शा अल्लाह मैदान-ए-अमल में जा रहे हैं। वहां पहुंच कर एक मुरब्बी का सबसे पहला काम क्या होना चाहिए? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने इस प्रश्न का उत्तर अता फ़रमाते हुए फ़रमाया :

उत्तर : वहां पहुंचने के पहले तो दुआ करें कि अल्लाह तआला उस जगह जहां मेरी पोस्टिंग हुई है, मुझे सही तौर पर ईमानदारी से, इख़लास से, वफ़ा से काम करने की तौफ़ीक़ दे। ठीक है दुआ करें। और सबसे पहले अल्लाह तआला से अपना सम्बन्ध बढ़ाएं। हमेशा याद रखें कि हमारे काम दुआओं से होते हैं। इसलिए हर मुरब्बी और मुबल्लिग़ जब मैदान-ए-अमल में जाता है तो उस को चाहिए कि यह अह्द करे कि आज के बाद से मैंने तहज्जुद की नमाज़ कभी नहीं छोड़नी, नियमित पढ़ूँगा। आपके बहुत सारे मुबल्लग़ीन फ़ौत होते हैं, उनकी तिथि में वर्णन करता हूँ, तो मैं कहता हूँ कि वे तहज्जुद नियमित पढ़ने वाले थे। हर मुरब्बी को कम अज़ कम एक घंटा प्रतिदिन तहज्जुद पढ़नी चाहिए। इस में दुआ करें कि अल्लाह तआला आपके काम में बरकत डाले। फिर पाँच नमाज़ें जो हैं, जो आपका सैंटर है या मस्जिद है इस में यदि आप वहां मौजूद हैं तो मस्जिद में जाएं और पाँच नमाज़ें बाक़ायदगी से बा जमाअत अदा करवाएं। फिर हर अहमदी जो है उससे अपना ज़ाती सम्बन्ध पैदा करें। यदि अहमदियों में आपस में रंजिशें हैं, नाराज़गी है, किसी की नाराज़गी जो दूसरे के साथ है, उस को आप ने दूर करना है। लोगों को समझाएँ कि हम मोमिन हैं और मोमिन भाई भाई होते हैं। वहां सुलह और भाईचारे से हर एक अहमदी को रहने की तरफ़ तवज्जा दिलाएँ। और किसी किस्म की नाराज़गी यदि है तो उस को दूर कर दें। हर एक से ज़ाती सम्बन्ध हो और लोग जो हैं वे आपसे ज़ाती सम्बन्ध रखने वाले हों, आपसे प्यार करने वाले हों और आप लोगों से प्यार करने वाले हों। इस तरह जब आप कोई बात उनको कहें तो वे आपकी बात स्वीकार करें। इसी तरह ख़लीफ़-ए-वक़्त से नियमित सम्बन्ध रखें। अपनी माहाना रिपोर्ट जो भेजते हैं, इस के इलावा एक महीना में एक ज़ाती ख़त मुझे लिखा करें ताकि पता लगे कि मुरब्बी साहब कैसा काम कर रहे हैं। और लोगों में भी यह चीज़ पैदा करें कि उन्होंने ख़लीफ़-ए-वक़्त से सम्बन्ध रखना है। जब से इंडोनेशियन डैसक यहां क़ायम हुआ है, काफ़ी संख्या में लोग मुझे ख़त लिखते हैं, जो अनुवाद हो कर आ जाते हैं। तो लोगों को तवज्जा दिलाया करें कि वे भी ख़िलाफ़त से सम्बन्ध रखें और बाक़ायदगी से हर हफ़्ता जो जुमा का ख़ुतबा है वे सुना करें और इस में जो नसीहत की बात होती है, अमल करने वाली बातें होती हैं, उन पर अमल करने की कोशिश करें। सबसे पहले मुरब्बी साहब ख़ुद और फिर लोग। ठीक है।

(संकलनकर्ता ज़हीर अहमद ख़ान, विभाग रिकार्ड दफ़्तर प्राईवेट सैक्रेटरी लंदन)

(धन्यवाद् के साथ अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 18 दिसंबर2020)

☆ ☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

(grassroot) तक जा कर तजनीद इकट्ठी करें।

सैक्रेटरी तर्बीयत बराए नौमुबाईन को हुज़ूर अनवर ने पूछा कि नौमुबाईन को जमाअती मामूलात में शामिल करने और निज़ाम-ए-जमाअत का हिस्सा बनाने के लिए उन्होंने क्या इक़दामात किए हैं। इस विभाग के सम्बन्ध में हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया आप को इसी नहज पर मंसूबा बंदी करनी चाहिए कि हर नौ मुबाइअ तीन साल के अरसा के अंदर अंदर जमाअत का हिस्सा बन जाए।

हुज़ूर अनवर ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सैक्रेटरी साहिब तालीमुल क़ुरआन वक़्फ़-ए-आरिज़ी को फ़रमाया : सबसे पहले तो आमिला मैंबरान को वक़्फ़-ए-आरिज़ी करवाएं। पहले नैशनल आमिला, फिर रीजनल और फिर इसी तरह लोकल मज्लिस आमिला वालों को वक़्फ़-ए-आरिज़ी की तरग़ीब दिलाएँ। इस तरह से आपको तब्लीग़ में भी और जमाअतों की तर्बीयत में भी सहायता मिलेगी।

हुज़ूर अनवर ने नैशनल सचिवों के बाद ज़ोनल मुबल्लग़ीन और ज़ोनल सदरान से भी अकेले अकेले उनका और उनके क्षेत्र का मुख़्तसर परिचय हासिल किया। इस परिचय में ख़ास दिलचस्प बात यह थी कि हुज़ूर अनवर को घाना के जुग़राफ़िया का बड़ी अच्छी तरह से अंदाज़ा है और समस्त इलाक़ों के नामों से बख़ूबी वाक़फ़ीयत है। इस बात से समस्त हाज़िरीन को ख़ुशगवार हैरत हुई।

परिचय करवाते समय जामिआ अहमदिया घाना से फ़ारिग़-उत-तहसील स्थानी मुबल्लग़ीन हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की ख़ास तवज्जा और शफ़क़तों का मर्कज़ रहे। हुज़ूर अनवर ने मुबल्लग़ीन को हिदायात देते हुए फ़रमाया कि रिपोर्टस के अतिरिक्त जो ज़ाती पत्र मुझे लिखते हैं वे उर्दू में लिखें और एक माह में कम अज़ कम एक ज़रूर लिखें। और मलफ़ूज़ात हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का रोज़ाना बाक़ायदगी से अध्यन करते रहें चाहे आधा पृष्ठ ही पढ़ें और उर्दू बोला करें। एक मुबल्लिग़ ने जब हुज़ूर के इस्तिफ़सार पर अर्ज़ किया कि थोड़ी-थोड़ी उर्दू आती है। तो हुज़ूर अनवर फ़रमाया : इस का अर्थ है कि काफ़ी आत है, क्योंकि जिन्हें उर्दू अच्छे तरीक़ से नहीं आती वे कहते हैं थोड़ा थोड़ा।

एक मुबल्लिग़ सिलसिला आदरणीय मुहम्मद कोई (mohammed quaye) साहिब ने जब उर्दू में हुज़ूर अनवर को अपना परिचय करवाया तो हुज़ूर अनवर ने प्रसन्नता का इज़हार फ़रमाते हुए फ़रमाया कि तुम सफ़ल हो गए ज़ोनल मिशनरी। माशा अल्लाह।

समस्त हाज़िरीन से बात हो चुकी तो पहले आदरणीय अमीर और मिशनरी इंचार्ज साहिब ने तिथि 5 दिसंबर 2020 ई. को घाना में होने वाले सदारती और पारलेमेंटरी इलैक्शन का वर्णन करते हुए हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में आजिज़ाना दुआ की दरख़ास्त की कि अल्लाह तआला करे कि यह इलैक्शन पुर अमन तरीक़ से हो जाएगी। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

यदि तो मौजूदा हुकूमत ने मुल्क के लिए अच्छी कारकर्दगी दिखाई है तो फिर वह जीत जाएं। लेकिन यदि ऐसा नहीं है तो फिर मैं दुआ करता हूँ कि और लोग आएं जो मुल्क के लिए फ़ाइदामंद और सहायक हूँ और मुल्की मुफ़ाद के लिए दियानतदारी और ख़ुलूस से काम करें। इंशा अल्लाह

आदरणीय अमीर साहिब ने हुज़ूर अनवर का मज्लिस-ए-आमला घाना की इस इज़्ज़त अफ़्ज़ाई पर शुक्रिया अदा किया। इस के बाद हुज़ूर अनवर ने सबको अस्सलामो अलैकुम वरह मतुल्लाह का तोहफ़ा इनायत फ़रमाया और यह मीटिंग अपने इख़ततताम को पहुंची।

(रिपोर्ट अलीम महमूद, मुरब्बी सिलसिला घाना)

(ध्यन्वाद सहित अख़बार अलफ़ज़ल इंटरनैशनल 11 दिसंबर 2020)

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-23)

करोशीन और जर्मन महिला लेखकों का हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से इंटरव्यू

(रिपोर्टः अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादकः सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ ले गए जहां आदरणीय अमीर साहब जमाअत कैनेडा आदरणीय मलिक लाल ख़ानसाहब ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ दफ़्तरी मुलाक़ात की और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल की सेवा में विभिन्न विषय प्रस्तुत कर के रहनुमाई प्राप्त की।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए

इस के बाद 9 बजकर 50 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में तशरीफ़ ले आए जहां प्रोग्राम के अनुसार आदरणीय हैदर अली ज़फ़र साहब मुबल्लिग़ इंचार्ज जर्मनी ने 20 निकाहों का ऐलान किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ इस मध्य तशरीफ़ फ़र्मा रहे और अंत में दुआ करवाई।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ मग़रिबअ और इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अन्वर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

9 जून 2015 ई. दिन सोमवार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े चार बजे पधार कर नमाज़-ए-फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक और रिपोर्टस और पत्र मुलाहिज़ा फ़रमाए और हिदायात से नवाज़ा।

"मस्जिद बैयतुल सलाम" का नींव का पत्थर

आज प्रोग्राम के अनुसार ISERLOHN शहर में मस्जिद बैयतुल सलाम की नींव का पत्थर और VECHTA शहर में मस्जिद बैयतुल क़ादिर के उद्घाटन की तक़ारीब थीं।

इन दोनों तक़ारीब के बाद रात का क़ियाम जमाअत OSNABRUK में था और फिर यहां से अगले दिन लंदन के लिए प्रस्थान था।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ सुबह दस बजकर 45 मिनट पर अपने रहने के स्थान से बाहर पधारे। बैयतुल-सबूह का बाहरी सेहन जमाअत के लोग पुरुष और महिलाएं, बच्चों और बच्चियों से भरा हुआ था। बच्चे और बच्चियों के समूहों की शक्ल में अलविदाई नज़्में पढ़ रहे थे।

जमाअत के लोग दौ लाइनों में खड़े थे। हुज़ूर अनवर अपना हाथ हिलाते हुए और लोगों के पास से गुज़रते हुए महिलाओं की ओर तशरीफ़ ले गए और सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और दुआ करवाई।

इस के बाद क़ाफ़ला यात्रा पर रवाना हुआ। फ्रैंकफ़र्ट से ISERLOHN की दूरी 203 किलोमीटर है। एक घंटा 55 मिनट की यात्रा के बाद 12 बजकर 40 मिनट पर होटल VIERJAHRESZEITEN में तशरीफ़ आवरी हुई। पहले से निर्धारित प्रोग्राम के अनुसार नींव के पत्थर के समारोह के हवाला से यहां सीमित समय के लिए क़ियाम का प्रबन्ध किया गया था।

एक बजकर पाँच मिनट पर यहां से हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद बैयतुल सलाम के नींव के पत्थर के लिए रवाना हुए। यह ज़मीन ISERLOHN शहर के एक प्रसिद्ध हिस्सा में है।

जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ होटल से रवाना हुए तो पुलिस के दो मोटर साईकल सवारों ने क़ाफ़ला को उसको इस्कोर्ट किया। पाँच मिनट की यात्रा के बाद जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की गाड़ी स्थान पर पहुंची तो स्थानीय जमाअत के लोगों पुरुष और महिलाओं और बच्चों ने अपने प्यारे आक़ा का बड़े जोश के रूप में स्वागत किया। स्थानीय जमाअत के लोगों आज सुबह से ही अपने प्यारे आक़ा की आमद के मुंतज़िर थे। आज उन के लिए ख़ुशियों और मसर्रतों का दिन आया था। उनकी बस्ती में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के मुबारक क़दम पहली मर्तबा पड़ रहे थे। प्रत्येक बेहद ख़ुश था। जमाअत के लोग बुलंद आवाज़ में नारे बुलंद कर रहे थे। और बच्चे और बच्चियां समूहों की शक्ल में स्वागतम के गीत प्रस्तुत कर रहे थे।

लोकल सदर जमाअत आदरणीय रऊफ़ अहमद साहब और मुबल्लिग़ सिलसिला सफ़ीरुर रहमान साहब नासिर ने हुज़ूर अनवर को स्वागतम कहा और हाथ मिलाने के सौभाग्य प्राप्त किया।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ मारकी में तशरीफ़ ले आए जहां निरंतर समारोह का आरंभ तिलावत क़ुरआन-ए-करीम से हुआ। आदरणीय सफ़ीरुल रहमान साहब मुबल्लिग़ सिलसिला ने तिलावत की और प्रिय सआदत अहमद साहब ने इस का अनुवाद प्रस्तुत किया।

अमीर साहब जर्मनी का ऐडरैस

इसके बाद आदरणीय अमीर साहब जर्मनी ने अपना परिचयात्मक भाषण प्रस्तुत किया। अमीर साहब ने इस शहर के परिचय में बताया कि यह शहर ISERLOHN जर्मनी के एक विशेष क्षेत्र RUHRGEBIET के किनारे पर स्थित है। यह शहर प्रोटैस्टैंट चर्च के पश्चिमी क्षेत्र का केंद्र है। इस शहर में पहले से मुस्लमानों की तीन मस्जिदें उपस्थित हैं और अब हम चौथी मस्जिद का नींव का पत्थर रख रहे हैं।

इस शहर में जमाअत का क़ियाम 1992 में अनुकरण में आया और एक हाल किराए पर लेकर जमाअती प्रोग्राम होते थे। जमाअत की संख्या बढ़ने से अब यह हाल छोटा हो गया था।

मस्जिद के लिए मौजूदा हिस्सा ज़मीन 2009 में देखा गया और नवंबर 2010 में इस का समझौता हुआ। यह ज़मीन 1615 मुरब्बा मीटर है और 96715 यूरो में ख़रीदा गया है। इस मस्जिद में मर्दाना और महिलाओं के नमाज़ के हाल के अतिरिक्त 12 मीटर बुलंद मीनार बनने होगा और गुम्बद का क़तर 6 मीटर होगा। 13 गाड़ियों की पार्किंग की गुंजाइश है।

ग़ैर मुस्लिम जर्मन के सम्मानिय लोगों के भाषण

अमीर साहब जर्मनी के ऐडरैस के बाद काओनटी कमिशनर Mr.THOMAS GEMKE साहब ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत किया

उन्हों ने कहा सम्मानित ख़लीफतुल मसीह! यह मेरे लिए ख़ुशनसीबी है कि आपके साथ बात करने का अवसर मिल रहा है। मैं यहां के ज़िला की ओर से भी ख़लीफतुल मसीह को स्वागतम कहता हूँ।

ISERLOHN शहर जहां स्थित है यह क्षेत्र अत्यधिक सुन्दर है। इस शहर में विभिन्न इंडस्ट्रीज़ उपस्थित हैं और आज सबसे बड़ी ख़ुशी की बात यह है कि इस क्षेत्र की यह पहली मस्जिद है जो बिल्कुल नए सिरे से बन रही है। उन्हों ने कहा जब विभिन्न कल्चर और क़ौमों के लोग एक जगह पर रहें तो ज़रूरी है कि सब एक दूसरे से प्यार और इज़्ज़त से प्रस्तुत आएं। सब बराबर हैं और अपनी राय का प्रकटन करना सब का हक़ है और सबको आज़ादी है। जब यहां मस्जिद बन जाएगी तो यह एक ऐसी जगह होगी जहां हम सब मिलकर इकट्ठे हो कर बातचीत कर सकेंगे और एक दूसरे के बारे में जान सकेंगे।

उन्हों ने कहा हमें इस बात की ख़ुशी है कि मुस्लमान इधर अमन के साथ रहना चाहते हैं। यदि हम सब जमाअत अहमदिया के माटो "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" पर अनुकरण करेंगे तो पूरे संसार में अमन क़ायम हो सकता है। अंत में उन्हों ने एक-बार फिर आज की दावत का शुक्रिया अदा किया।

इस के बाद मेंबर ज़िला असैंबली Mr.MICHAEL SCHEFFLER साहब ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत करते हुए कहा :

सम्माननीय ख़लीफतुल मसीह! सबसे पूर्व मैं इस बात का शुक्रिया अदा करता हूँ कि आपने मुझे यहां आने की दावत दी। मैं बहुत ख़ुशी के साथ यहां आया हूँ। मैं इस लिए ख़ुशी के साथ यहां आया हूँ कि जमाअत अहमदिया हमारे शहर में अमन के क़ियाम के लिए, शहर की प्रगति के लिए वयस्त है। तथा जमाअत ने कुछ दिन पूर्व यहां पौधे लगाने का प्रोग्राम है।

उन्हों ने कहा आपका संदेश अमन का संदेश है। जो लोग इस अमन के संदेश को लेकर इस शहर में चलते हैं, यहां रहते हैं हम उनको स्वागतम कहते हैं।

उन्हों ने कहा सहिष्णुता, सत्कार और INTEGRATION मिल-जुल कर रहने के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है और यह ऐसी बातें हैं जो अहमदिया मुस्लिम जमाअत में देखने को मिलती हैं।

उन्हों ने कहा वह समस्त अवाम की ओर से जमाअत अहमदिया को स्वागत कहते हैं

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 23 September 2021 Issue No.38

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

और मस्जिद के उद्घाटन के इंतिज़ार में हैं। उन्हों ने कहा कि मस्जिद का बनना इस बात की अलामत है कि आप यहां अमन के साथ मिल-जुल कर रहना चाहते हैं। इसी तरह आपस में इत्तिफ़ाक़ पैदा किया जा है।

उन्हों ने कहा जमाअत INTEGRATION में आगे आगे है। उनका माटो अमन सब के लिए और नफ़रत किसी से नहीं इस बात का बैन सबूत है। इस के अतिरिक्त यह कि जमाअत अपना ख़ुतबा जुमा भी जर्मन भाषा में ज़रूर प्रस्तुत करती है। उन्हों ने कहा यहां जर्मनी में 1.4 मिलियन मुस्लमान आबाद हैं और 210 मस्जिदों इधर पाई जाती हैं। इस क्षेत्र में 153 विभिन्न क़ौमों के लोग आबाद हैं और सब अमन और मुहब्बत से रहते हैं। यह बात अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि लोग एक दूसरे के साथ खुले दिल से व्यवहार करें और इस में मस्जिदें और गिरजों का भी विशेष आचरण है कि वह किस तरह नौजवानों को धर्म से जोड़ें और समझाएँ कि एक दूसरे से अमन और सहिष्णुता का व्यवहार करो।

इस के बाद शहर HEMER के मेयर Mr.MICHAEL ESKEN ने अपना ऐडरैस प्रस्तुत किया। मेयर ने इस बात पर ख़ुशी का प्रकटन किया कि जमाअत अहमदिया सब कुछ ऐलानीया करती है और अपना ये प्रोग्राम भी ख़ुफ़ीया तौर पर नहीं कर रही बल्कि सब के साथ मिलकर ये प्रोग्राम आयोजित कर रही है। मैं जमाअत की दावत का शुक्रिया अदा करता हूँ।

मेयर ने कहा यहां भी पड़ोसियों की ओर से आरक्षण का प्रकटन होना शुरू हो गया था जब उनको मालूम हुआ कि यहां मस्जिद के लिए जगह प्राप्त की जारी है। परन्तु इसके लिए जमाअत की ओर से बहुत सी मालूमाती नशिस्तें आयोजित की गईं और उन के माध्यम लोगों के संदेह दूर किए गए और उनका भय जाता रहा और इस्लाम की जो ग़लत तस्वीर थी वह दरुस्त हो गई और नफ़रतें मोहब्बतों में बदल गईं। जमाअत मस्जिद बना कर लोगों का भय दूर कर रही है।

उन्हों ने कहा : अंत में एक-बार फिर सब का शुक्रिया अदा करता हूँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का भाषण

इस के बाद एक बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने भाषण फ़रमाया :

तशह्हुद और ताव्वुज़ और तसमीया के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : समस्त आदरणीय मेहमानानो को अस्सलामो अलैकुम वरह मतुल्लाही व बराकातहु

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आज यहां जमाअत अहमदिया को मस्जिद की बुनियाद रखने की तौफ़ीक़ मिल रही है । अमीर साहब ने अपने परिचय के भाषण में एक बात यह भी कही कि बड़ा सुन्दर स्थान है और निश्चित रूप से यह बात उनकी सही है। क्योंकि रस्ते में आते हुए भी और यहां भी, जितना स्थान मैंने देखा है, रास्ते में एक होटल में रुके थे उस के पांचवें फ़्लोर से मैंने दृश्य देखा था, तो यह बहुत सुन्दर स्थान है। और स्थान की सुन्दरता उस समय और भी निखरति है जब इस क्षेत्र में रहने वाले लोग भी सुन्दर हों और इन्सानों की सुन्दरता केवल शक्लों की सुन्दरता नहीं होती बल्कि उनके आचरण की सुन्दरता होती है। और यह बात साधारणता उस क़ौम में पाई जाती है कि यह उच्च आचरण के लोग हैं और निश्चित रउप से यहां जब क़ुदरत ने उन्हें सुन्दरता दी तो उस के साथ उनके आचरण की सुन्दरता ने इस क्षेत्र को और भी सुन्दर बना दिया और आप लोगों को सुन्दर बनाया दिया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

सुन्दरता में बढ़ोतरी कई दफ़ा इन्सान अपनी प्रयास से भी करता रहता है और इमारात भी क्षेत्र को सुन्दर बनाती हैं। अमीर साहब ने कहा कि आशा है कि यहां एक सुन्दर मस्जिद बनेगी। सुन्दर मस्जिद की बात हुई तो यह भी बता दूं कि इमारत की सुन्दरता एक ज़ाहिरी हुस्न तो है और इस से कई गुना बढ़कर हुस्न अल्लाह तआला ने हमें अपनी क़ुदरत के नज़ारों में दिया हुआ है। इस लिए एक इन्सानी प्रयास से एक सुन्दर इमारत बनाना कोई बहुत उच्च बात नहीं है। किसी भी इबादत-गाह का असल हुस्न उन लोगों से होता है जो उस को इबादत-गाह बनाते हैं और मुझे आशा है कि इन शा अल्लाह तआला जमाअत अहमदिया के सदस्य जो इस मस्जिद को बनाने वाले हैं वह इस इमारत की सुन्दरता को अपने आचरण के हुस्न से भी निखारेंगी ताकि जो सुन्दर आचरण यहां के लोगों का है इस में मज़ीद बढ़ोतरी करने वाले हों।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : फिर मस्जिदें का हुस्न इबादत का हक़ अदा करने से होता है। मस्जिदें तो बनाई ही इस लिए जाती हैं कि ख़ुदा तआला का घर है और ख़ुदा की इबादत की जाए। अत: असल हुस्न उस समय

पृष्ठ 1 का शेष

जिन पर नबुव्वत के भी सारे कमाल ख़त्म हो गए। आपने जो राह धारण किया है वह बहुत ही सही और सब से निकट है। इस राह को छोड़कर दूसरी ईजाद करना,चाहे वह ज़ाहिर में कितनी ही ख़ुश करने वाला मालूम होती हो। मेरी राय में हलाकत है और ख़ुदा तआला ने मुझ पर ऐसा ही प्रकट किया है।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सच्चे अनुक्रण से ख़ुदा मिलता है और आपके अनुकरण को छोड़कर चाहे कोई सारी उम्र टक्करें मारता रहे,मूल लक्ष्य उसके हाथ में नहीं आ सकता; अत: सादी भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अनुकरण की ज़रूरत बताता है।

बज़हद वरअ कोष व सिदक़ व सफ़ा
व लेकिन मेफ़ज़ाए बर मुस्तफ़ा

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 323 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

प्रकट होता है जब वह लोग इबादत का हक़ अदा करने वाले भी हों और जिस ख़ुदा ने पैदा किया है उस का शुक्र अदा करने वाले हों। और फिर उस के साथ ही जो इन्सानियत है ,जो अल्लाह की मख़लूक़ है, उसका भी हक़ अदा करने वाले हों। केवल इबादत का हक़ अदा करने से मस्जिद का उद्देश्य पूरा नहीं होता जब तक कि इन्सानी क़दरों का भी आला दर्जा तक ख्याल न रखा जाए। और मेरे धर्म में इन्सानी क़द्रें बहुत एहमीयत की हामिल हैं। उनके बिना धर्म अपूर्ण है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मुझे तो ख़ुशी होगी कि इस मस्जिद की सुन्दरता में यहां आने वाले अहमदी अपने पैदा करने वाले की इबादत के साथ साथ उसकी मख़लूक़ का हक़ अदा करने वाले हों और मख़लूक़ का हक़ अदा करके उसे सुन्दर बनाएँ। और जब यह सुन्दरता होगी तो फिर कुछ ग़लत-फ़हमियों के कारण से जिस का हमारे नैशनल अमीर साहब ने वर्णन किया, कुछ जगह थोड़ा बहुत विरोध भी हुआ, स्वयं मस्जिद बनने के साथ ख़त्म हो जाएगा। और मुझे आशा है कि इन शा अल्लाह तआला इसी प्रकार होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : बहरहाल मैं इन समस्त सहायता करने वालों का, उन लोगों का भी शुक्रिया अदा करता हूँ, जिन में मेयर साहब भी शामिल हैं, उनकी कौंसल भी शामिल है, यहां के लोग भी शामिल हैं कि जिन्हों ने इस मस्जिद को बनाने की आज्ञा लेने में अपना योगदान अदा किया है। यह भी मेरी दुआ है कि इन लोगों की ओर से जिस उच्च समझदारी का प्रदर्शन किया गया है यह सिलसिला हमेशा जारी रहे और जमाअत अहमदिया के सदस्य और स्थानीय लोगों के आपस के संबंध मज़ीद बढ़ते चले जाएं। जमाअत अहमदिया के सदस्य भी इस शहर के शहरी हैं और इस दृष्टि से उनके भी वही कर्तव्य हैं जो प्रत्येक शहर के शहरी और देश के शहरी के होने चाहिऐं। और इन शा अल्लाह तआला जमाअत अहमदिया जैसा कि मैंने पहले भी कहा, मेरी ख़ुशी इसी में होगी कि अपना उच्च आचरण प्रस्तुत करे और मैं आशा रखता हूँ कि इन शा अल्लाह तआला यह उच्च आचरण अदा करेगी। और भरपूर प्रयास करेगी कि यह जो आपस के संबंध हैं उनमें यदि कुछ लोगों के आरक्षण हैं तो वह आरक्षण इंशा अल्लाह तआला दूर होंगे। और समस्त विरोध करने वाले यदि कोई रह गया हैं तो इन शा अल्लाह तआला ख़त्म हो जाएँगें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : कमिशनर साहब ने एक बड़ी अच्छी बात की कि यहां प्रत्येक को आज़ादी से बात करने का हक़ है। और आज़ादी से इज़हार-ए-ख़याल करना चाहिए और यह आज्ञा प्रत्येक शहरी को है। निश्चित तौर पर होनी चाहिए परन्तु हम साथ यह भी कहते हैं और मैं इस बात का भी क़ायल हूँ कि प्रकटन की आज़ादी के साथ दूसरे के भावनाओं का ख्याल रखना भी ज़रूरी है। यदि मैं किसी दूसरे के भावनाओं का खयला नहीं रखता और केवल अपनी आज़ादी का ही क़ायल हूँ तो फिर उस आज़ादी से कई दफ़ा नफ़रतें पैदा होती हैं। मुहब्बत पैदा करने के लिए ज़रूरी है कि आज़ादी के साथ दूसरे के भावनाओं का भी ख्याल रखा जाए। और इन शा अल्लाह तआला हम जमाअत अहमदिया के सदस्य इसकी हमेशा पाबंदी करेंगे। पहले भी करते हैं और आइन्दा भी करेंगे। और दूसरों से भी आशा रखते हैं कि आज़ादी को सीमित न कर दें। आज़ादी की कुछ सीमा निर्धारित करें और एक दूसरे की भावनाओं का ख्याल भी रखें। इसी तरह एक समाज में अमन और मुहब्बत की फ़िज़ा क़ायम होती है

(शेष.....)

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad